भूगोल तत्त्व

श्रीयुत मिस्टर वलियम हैण्डफोर्ड साहब

बहादुर

डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन

सूबह अवध

की

आज्ञानुसार ॥

अवध देश की पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये

पण्डित कालीचरण

हिन्दी टीचर, नारमेल स्कूल, लखनऊ ने

उर्दू जुग़राफ़िये अनीसुस्सब्याहीन से

हिन्दी भाषा में उल्था किया ॥

लखनऊ:

मतबअ मुंशी नवल किशोर में बअहतमाम मुहम्मद मुस्तफ़ा खां के

छापी गई ॥

सन् १८६५ ई०

भूगोल तत्व

श्रीयुत मिस्टर वलियम हैण्डफोर्ड साहब

बहादुर

डैरेकृर आफ् पब्लिक इन्स्ट्रक्शन

सूबह अवध

की

आज्ञानुसार ॥

अवध देश की पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये ॥

पण्डित कालीचरण

हिन्दी टीचर, नारमेल स्कूल, लखनऊ ने

उर्दू जुग़राफ़िये अनीसुस्सय्याहीन से

हिन्दी भाषा में उल्था किया ॥

लखनऊ :

मतबअ मुंशी नवलकिशोर में बअहतमाम मुहम्मद मुस्तफ़ाखां के
छापी गई ॥

सन् १८६५ ई०

भूगोल तत्त्व

[१] पृथ्वी के आकार और परिमाण के विषय में ॥

भूगोल विद्या में पृथ्वी के गोल का वर्णन है ॥

पृथ्वी गेंद के सदृश गोलाकार है ॥

पृथ्वी का व्यास अर्थात् उसके मध्य की नाप सात हज़ार नौ सै बारह मील और उसकी परिधि अर्थात् उसके घेरे की नाप चौबीस हज़ार आठ सै छप्पन मील है ॥

पृथ्वी का धरातल अनुमान उन्नीस किरोड़ सत्तर लाख वर्गात्मक मील है ॥

[२] पृथ्वी की गति के विषय में ॥

पृथ्वी चन्द्रमा के सदृश आकाश में भ्रमण करती है वह किसी वस्तु पर स्थिर नहीं है ॥

पृथ्वी २४ घंटों में एक बार अपनी कील पर घूम जाती है और इसी से रात दिन पैदा होते हैं ३६५ दिन और ६ घंटे में पृथ्वी सूर्य्य के चारों ओर भ्रमण करती है और इससे ही एक वर्ष उत्पन्न होता है ॥

[३] ग्रह विषय ॥

सूर्य्य और पृथ्वी के बीच में नौ किरोड़ पचास लाख मील का अंतर है सूर्य्य पृथ्वी से लगभग तेरह लाख गुण बड़ा है नक्षत्र वह आकाशीय पिण्ड हैं जो सूर्य्य के ओर पास भ्रमण करते हैं॥ मुख्य नक्षत्र ये हैं बुध, शुक्र पृथ्वी मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरानिस अर्थात् हरसल नेप्च्यून

[४] भूगोल की रेखाओं का वर्णन ॥

पृथ्वी की धुरी वह एक कल्पित रेखा है जो उसके केन्द्र में होकर जाती है और उसी पर पृथ्वी घूमती मालूम होती है उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव पृथ्वी की धुरी के सिरे हैं ॥

बिषुवत् रेखा एक कल्पित वृत्त है जो पृथ्वी के ध्रुवों से समानान्तर होकर उसके आर पार जाता है बिषुवत् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर किसी स्थान की दूरी उस स्थान का अक्षांश कहाती है मध्यरेखा वे हैं जो पृथ्वी के चारों ओर उसके ध्रुवों में जाती हुई कल्पित की गई हैं कल्पित मध्य रेखा से किसी स्थान की दूरी पूर्व या पश्चिम की ओर उस स्थान का देशांश कहाती है ॥

[५] कटिबन्धों का वर्णन ॥

कर्क रेखा और मकर रेखा दो कल्पित वृत्त हैं जो कि बिषुवत् रेखा से साढ़े तेईस २ अंश के लगभग विषुवत वृत्त के समानान्तर खिंचे हैं उनमें उत्तर की रेखा को कर्क और दक्षिण की को मकर कहते हैं ॥

कदम्ववृत्त वे हैं जो दोनों ध्रुवों से साढ़े तेईस २ अंश के अंतर से खिंचे हैं इनमें से उत्तरीय ध्रुव के समीपी वृत्त को उत्तरीय और दक्षिणीय ध्रुव के समीपवाले को दक्षिणीय कदम्व वृत्त कहते हैं ॥

पृथ्वी गरमी और सरदी के अनुसार पांच कटिबंध अर्थात् पटकों में बिभाग की गई है ॥

जो कर्क और मकर रेखाओं के मध्य में है उसे उष्ण कटिबन्ध कहते हैं और उत्तरीय और दक्षिणीय समकटिबन्ध वे हैं जो कर्क और मकर और दोनों कदम्ववृत्तों के मध्य में हैं और जो दोनों कदम्ब वृत्तों के मध्य में हैं उन्हें उत्तरीय और दक्षिणीय शीत कटिबन्ध कहते हैं ॥

[६] पृथ्वी के स्वाभाविक भागों का वर्णन ॥

पृथ्वी का उपरितल भाग जल और थलमें विभाग किया गया है चौथाई के लगभग थलहै और $\frac{3}{4}$ के लगभगजल है

पृथ्वी के मूल भाग महाद्वीप द्वीप प्रायद्वीप डमरूमध्य और अन्तरीप हैं ॥

महाद्वीप पृथ्वी का अति बड़ा खण्ड है ॥

द्वीप पृथ्वी के उस छोटे भाग को कहते हैं जो सम्पूर्ण जल से घिरा हो ॥

प्रायद्वीप पृथ्वी का वहभाग है जो जलसे घिरा हो परंतु किसी प्रकार पृथ्वी से भी मिला हो ॥

डमरूमध्य पृथ्वी का वह संकुचित भाग है जो अपने से दो बड़े भागों को मिलाता है ॥

अन्तरीप पृथ्वी का वह भाग है जो कि समुद्र में दूरतक प्रविष्ट है ॥

[७] पानीके विभागों का वर्णन ॥

जल के मूल भाग महासागर और सागर और झील खाल आखात और मुहाना और नदी हैं ॥

महासागर खारी पानी के अति बड़े भाग कोकहते हैं ॥

महासागर से छोटे भाग को सागर कहते हैं ॥

झील पानीका वह भागहै जो चारों ओर थलसे घिराहो,

खाल जलका वह भाग है जो तीन तरफ थलसे घिरा हो,

आखात सागर का वह एक भाग है जो पृथ्वी में चला गया हो ॥

मुहाना जलका एक तंग मार्ग है जो दो सागरों को मिलाता है ॥

[८] जल और थल के बड़े भागों का वर्णन ॥

भूगोल का धरातल दो बड़े भागों में विभाग किया गया

है जिनको पूर्व्वगोलार्द्ध और पश्चिमगोलार्द्ध कहते हैं ॥

थल के पांच बड़े भाग अर्थात् एशिया यूरप आफ्रीका और अमेरिका और ओशनिया हैं ॥

ओशनिया में बड़ा द्वीप आष्ट्रेलिया और बहुतसे छोटे २ द्वीप स्थिर महासागर में फैले हुए हैं उन में थल अनुमान पांच किरोड़ बीस लाख वर्गात्मक मील है इस क्रम से कि एशिया में एक किरोड़ साठ लाख वर्गात्मक मील और यूरप में चालीस लाख वर्गात्मक मील और आफ्रीका में एक किरोड़ बीस लाख वर्गात्मक मील और अमेरिका में एक किरोड़ पचास लाख वर्गात्मक मील और ओशनिया में पचास लाख वर्गात्मक मील हैं ॥

सम्पूर्ण जल जो पृथ्वी के चारों ओर है वह सब पांच बड़े भागों में विभाग किया गया है ॥

अर्थात् स्थिरमहासागर हिंदुस्तान का महासागर एटलांटिक महासागर उत्तर महासागर और दक्षिण महासागर ॥

[८] वनस्पति द्रव्यों के वर्णन में ॥

उष्णकटिबंध में अत्यन्तश्रेष्ट मसाले और सुन्दरपुष्प और अत्यन्त बड़े २ वृक्ष उत्पन्न होते हैं वहाँ की मूल वनस्पतियों में से चांवल, कोदों, मक्का, रतालू, केला, नारियल, मिरच कहवा, चाह, रुई हैं ॥

सम कटिबंधों में - नारंगी - अँगूर - गेहूं - और जई आदि उत्पन्न होती हैं ॥

शीत कटिबंधों में अनाज नहीं उत्पन्न होता किन्तु वहाँ दो प्रकार की काइयां होती हैं जिनको लोग खाते हैं ॥

[१०] जीव जन्तुओं के विषय में ॥

उष्ण कटिबंधों में अत्यन्त बड़े २ और भयानक और स्वरूपवान् जीव अर्थात् हाथी - गेंडा सिंह-बाघ-घड़ियाल कावरा-तोता आदि उत्पन्न होते हैं ॥

समकटिबंधों के मुख्यजीव में घोड़े - पशु और भेड़ - बकरियां आदि हैं ॥

शीत कटिबंधों में न घोड़े होते हैं न पशु परन्तु कुत्ता, रिण्डियर बहुत काम देते हैं ॥

[११] पृथ्वी की आबादी के विषय में ॥

पृथ्वी की आबादी अनुमान एक अरब सात किरोड़ पचास लाख इस क्रम से है कि एशिया में बासठ किरोड़ और यूरप में सत्ताईस किरोड़ आफ्रीका में नौ किरोड़ अमेरिका में छः किरोड़ पचास लाख ओशनिया में तीन किरोड़ सब लोग उन्हीं आदम और हव्वा से उत्पन्न हुए हैं जो पहिले सब के माता पिता थे ईश्वर ने मनुष्यों को जातों में नहीं बिभाग किया है पृथक् २ जल और बायु और जीवन के भिन्न २ प्रकारों से जातों के मध्य में अन्तर होगया है ॥

मनुष्य तीन बड़े प्रकारों में बिभाग किये गये हैं अर्थात् काकेशियन, या इण्डो यूरूपियन, और दूसरे मांगोलियन, तीसरे हब्शी ॥

[१२] मनुष्यों के समूह की दशा आदि के वर्णन में ॥

मनुष्यों में जो सज्जनता है उसके हेतुसे उनको चार प्रकार से बिभाग किया है प्रथम बन्य दूसरे चरवाहे तीसरे अर्द्ध सज्जन चौथे सज्जन ॥

राज्य के विषय में ॥

राज्य के मूल दो प्रकार हैं प्रथम राजाधिकारी दूसरे प्रजाधिकारी ॥

मत के विषय में ॥

पृथ्वी में हिन्दू - बौद्ध - ईसाई - महम्मदी मत मुख्य हैं ॥

[१२] एशिया के विषय में ॥

एशिया की चारों सीमा ये हैं उत्तर में हिम महासागर पूर्व्वमें स्थिर महासागर - दक्षिण में हिन्द का महासागर पश्चिम में लालसागर और भूमध्यस्थ सागर और यूरप ॥

विस्तार का वर्णन ॥

एशिया का क्षेत्रफल एक किरोड़ साठ लाख वर्गात्मक मील के लगभग है ॥

भागों का वर्णन—एशिया में नीचे लिखे हुए देश हैं

उत्तर में एशियाई रूस पूर्व्व में चीन और जापान दक्षिण में आनाम स्याम ब्रह्मा और हिन्दुस्तान ॥

पश्चिम में अरब और रूम – मध्य में ईरान और अफगानिस्तान और बलोचिस्तान और स्वतंत्र तातार और चीनी तातार ॥

[१४] पहाड़ों के विषय में ॥

एशिया के मध्य में एक समधरातल है जो उचाई में तीन मील के लग भग है हिमालय के पर्ब्बत जो हिन्दुस्तान के उत्तर हैं वे संसार में सबसे ऊंचे हैं उनकी ऊंची से ऊंची चोटियां उंचाई में पांचमील के लगभग हैं ॥

एशियाई रूसके दक्षिण ओर आल्तेन पर्ब्बत है ॥

कास्पियन समुद्र और काले समुद्र के मध्य में काकेसस पर्ब्बत की श्रेणी है ॥

तारस पहाड़ एशियाई रूम के आर पार होता हुआ

गया है यूरल पर्ब्बत जो एशिया और यूरप की सोमा के एक भाग को बनाता है उसकी श्रेणी कम ऊंची है ॥

[१५] नदियों का वर्णन ॥

उत्तरी ढाल में इर्टिस नदी और एनीसी और ओबो, और लीना उत्तर ओर बहकर उत्तर महासागरमें गिरती हैं पूर्ब्बी ढाल में अमूर और याङ्गसीक्यां अर्थात् समुद्र का पुत्र और होआंहो अर्थात् पीत नदी बहकर स्थिर महासागर में गिरती हैं ॥

दक्षिणी ढलाव में कम्बोडिया, चीन के सागर में गिरती है और ऐरावती और ब्रह्मपुत्र और गङ्गा बङ्गाले के खाल में प्रवेश करती हैं और सिंधु नदी अरब के सागर में पड़ती है और फ्रात नदी और दजला नदी एक दूसरे से मिलकर फारस के खाल में जाती हैं मध्य में सिहर अर्थात् सैंहूं और अमू अर्थात् आक्सस अरल समुद्र में पड़ती हैं ॥

[१६] आब हवा और पैदावारी के वर्णन में ॥

एशिया के दक्षिणी भाग उष्ण हैं और मध्य के भाग शीत ऋतु में शीतल और ग्रीष्म ऋतु में ऊष्ण हैं और उत्तरीय भाग अत्यन्त शीतल है ॥

पैदावारी का वर्णन ॥

खान

एशिया में धातु और रत्न आधिक्यता से उत्पन्न होते हैं ॥

वनस्पति ॥

एशिया के दक्षिणी भाग मसाले के लिये प्रसिद्ध हैं चीन जापान और आसाममें चाह उत्पन्न होतीहै अरब औरलंका में कहवा दक्षिणो देशों में चांवल अधिक्यतासे बोया जाता है॥

अधिक उत्तरीय देशों में गेंहूं, जौ और जई उत्पन्न होते हैं हिन्दुस्तान में रुई और नील पैदा होते हैं ॥

पशु ॥

एशिया पशुओं की अधिकता और अनेक प्रकारों के कारण प्रसिद्ध है हाथी - गेंडे - शेर - बाघ और स्वरूपवान् पक्षी और नाना प्रकार के सर्प भिन्न २ भागों में पाये जाते हैं ॥

[१७] एशिया के वासियों का वर्णन ॥

पश्चिमी एशिया और हिन्दुस्तान के वासी काकेशियन की सन्ततियों में से हैं मलाया और आस पास के द्वीप के लोग मलाया की सन्तान में से और चीन और मध्य एशिया और उत्तरीय एशिया के लोग मङ्गोलियनों की सन्तति में से हैं एशिया में अनुमान बासठ किरोड़ मनुष्य हैं वहां के लोग प्राचीन रीति पर चलने के कारण प्रसिद्ध हैं बहुधा दशाओं में वह उसी प्रकार पोशाक पहनते और निर्बाह पूर्वक काम करते हैं जिस प्रकार कि वह हजारों वर्ष से पहिले करते थे ॥

एशिया के वासी दिखावट और सजावट के अनुरागी हैं वे अपने चाल चलन में मिलनसार होते हैं परंतु बहुधा असत्यवादी हैं स्त्रियां अज्ञानता में रक्खी जाती हैं और मुसल्मानी देशों में जबतक बुरकों से अच्छे प्रकार देह ढक नलें तबतक बाहर नहीं निकलतीं एशिया के सम्पूर्ण देशों के देशीय राज्य अत्यन्त स्वतंत्र हैं कई जातें और शाहजादे और सर्दार ऐसे हैं जो लूट से अपना निर्वाह करते हैं ॥

[१८] एशिया के मतों के विषय में ॥

पश्चिमी एशिया की बहुधा जातों का मत महम्मदी है एक खुदा को पूजते हैं परन्तु मत के बड़े २ मूल अर्थात् नीति सत्य और दया को भूले हुए हैं हिंदुस्तान के बहुधा बासी हिन्दी मत पर चलते हैं परंतु उनमें मुसल्मान भी

बहुत हैं हिन्दू मत में ३३ किरोड़ देवता पूज्य हैं उन में से विष्णु और शिव और काली अर्थात् दुर्गा के उपासक हैं और प्रायद्वीप चीन हिन्दी और चीन और मध्य एशिया में बौद्ध मत अनेक २ प्रकारों से प्रचलित है रूम में कुछ २ ईसाई पाये जाते हैं और पादरियों के परिश्रम और उद्योग से एशिया के भिन्न २ भागों में इन्जील फैलती जाती है॥

[१९] हिंदुस्तान का वर्णन॥

हिंदुस्तान दक्षिणी एशिया का मध्य वर्त्ती और सब से बड़ा प्रायद्वीप है उत्तर में हिमालय पर्व्वत और पूर्व में ब्रह्माका देश और बङ्गाले का खाल और दक्षिण में हिन्द का महासागर और पश्चिम में अरब का सागर और बलोचिस्तान और अफग़ानिस्तान उसकी सीमा हैं॥

विस्तार॥

हिंदुस्तान की अधिक से अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक उन्नीस सै मील और चौड़ाई पूर्व्व से पश्चिम तक पन्द्रह सै मील के लग भग है सब क्षेत्रफल चौदहलाख साठहज़ार वर्गात्मक मील के लग भग है जिस में अठारह-किरोड़ मनुष्यों की आबादी है॥

स्वाभाविक भाग॥

हिंदुस्तान का स्वाभाविक भाग उत्तरीय हिंदुस्तान और मुख्य हिंदुस्तान और दक्षिणीय हिंदुस्तान है॥

[२०] पहाड़ों का वर्णन॥

उत्तर में हिमालय पर्व्वत श्रेणी संसार में सबसे ऊंची है अधिक से अधिक ऊंची चोटियां जो अबतक प्रकट हुई हैं वे कांचनशृङ्गा और देवढङ्गा हैं जिन में से दूसरी समुद्र से २९ हज़ार फुट के लग भग ऊंची है सिन्धु नदी और

B

गङ्गा नदी के मध्य में अरावली पर्व्वत है विंध्याचल पर्व्वत खंभात के खाल से पूर्व्व की ओर चला गया है और नर्व्वदा नदी के खाल की उत्तरीय सीमा बनाता है॥

पश्चिमी घाट दक्षिण की सम धरातल पृथ्वी की पश्चिमी सीमा है॥

पूर्व्वीघाट दक्षिण की सम धरातल पृथ्वी की पूर्व्वी सीमा है नीलगिरि पर्व्वत पूर्व्वी और पश्चिमी घाट को मिलाता है

[२१] नदियों का वर्णन॥

ब्रह्म पुत्रनदी हिमालय के उत्तर से निकल कर गङ्गानदी के पूर्व्वी दहाने से मिलकर बङ्गाले की खाड़ी में प्रवेश करती है॥

गङ्गानदी हिमालय के दक्षिणी ढालसे निकल पन्द्रहसै मील बहकर बङ्गाले के खाल में गिरती है और गङ्गा की मुख्य सहायक यमुना और घाघरा ह जो हिमालय पर्व्वतों से निकलती हैं॥

चम्बल और शोणनदी जो विंध्याचल पहाड़ों की श्रेणी से निकलती है॥

सिन्धु नदी जो हिंदुस्तान में सब से बड़ी है हिमालय के उत्तर ओर से निकलकर अरब के महासागर में गिरती है॥

पांच नदियां जो पंजाबमें बहती हैं अर्थात् झेलम-रावी चिनाव - सतलज और व्यासा ये एक दूसरी से मिलती हुई सिन्धु नदी में प्रवेश करती हैं॥

अर्व्वली पर्व्वतों के पश्चमी झुकाव के पानी को लूनीनदी निकालती है और कच्छ के रन में होकर अरब के महासागर में गिरती है॥

नर्व्वदा और तापी पूर्व्व ओर बहकर अरब के महासा-

गर में मिलती हैं महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी बङ्गाले के खाल में गिरती हैं॥

[२२] आबहवा का वर्णन॥

हिंदुस्तान की आब हवा ऊंचे देशों के विशेष उष्ण है मूलतीन ऋतु अर्थात् शीत उष्ण और बर्षा हैं मौनसून अर्थात् सामयिक वायु जो नैऋत्य और ईशानकोण से बहती हैं हिंदुस्तान की आब हवापर बिशेष गुण रखती हैं नैऋतीय मौनसून मई से सितम्बर तक रहती है और ईशानी अक्तूबर से मार्च तक॥

मलावारके किनारे में नैऋतीय मौनसून से पानी बरसता है और कारो मण्डलके किनारे में ईशानी मौनसूनसे बर्षा होती है॥

खान का वर्णन॥

हिंदुस्तान बहुत कालसे हीरे के निमित्त प्रसिद्ध है और लोहा अत्यन्त होता है और पथरिया कोयला बङ्गाले और मध्य हिंदुस्तान में निश्चय हुआ है और पत्थर का निमक पंजाब में मिलता है शोरा अधिकता से उत्पन्न होता है॥

[२३] बनस्पतियों की उत्पन्न कारक पृथ्वी का वर्णन॥

मालवा और वे देश जो गंगा के पानी से सींचे जाते हैं उर्व्वरा और काली मृत्तिका के हैं सिन्ध, और कारो मण्डल के किनारे वहुधा रेतले हैं और वहुत से अन्य भागों की पृथ्वी चिकनी मिट्टी से मिली है॥

हिंदुस्तान की बनस्पतियों की उत्पत्ति नाना प्रकार की और श्रेष्ठ है अनाजों में चांवल बहुत प्रसिद्ध है परंतु दक्षिण में कोदों और उत्तर में गेहूं अधिकता से उत्पन्न होता

है शक्कर और मसाला - तमाखू - केला - नारंगी - आम नारियल - इन्ही ये सब बहुत उत्पन्न होते हैं रुई और नील व्यापारी वस्तुओं में बहुमोल्य हैं बांस भी बहुत होते हैं और बड़े काम में आते हैं साखू आबनूस और चन्दन इत्यादि की लकड़ियां जंगलों में बहुत पाई जाती हैं हिंदुस्तान वट के वृक्षों के कारण प्रसिद्ध है ॥

[२४] पशुओं का वर्णन ॥

भेड़ बकरी गाय बैल भैंसे घोड़े और ऊंट ये मुख्य पालतू जीव हैं - हाथी - बाघ - चीते - रीछ - पाढे और नाना प्रकार के बंदर और हिरन जंगलों में आधिक्यता से हैं पूर्व में गेंडा होता है और बङ्गाले में सारस बहुत होते हैं और चीलें और सुन्दर पर और बालों के पक्षी अधिक पाये जाते हैं ॥

सर्प बहुत होते हैं उन में से बहुधा कबरे के समान बड़े विषधर होते हैं नदियों में घड़ियाल बहुत हैं रेशम के कीड़े बहुत पाले जाते हैं चींटी - जुगनू और मच्छरों के झुण्ड के झुण्ड मिलते हैं ॥

[२५] हिंदुस्तान के बासियों का वर्णन ॥

हिंदुस्तान कई जातों से बसा है जो सूरत बोली और रीति में बहुत भिन्न २ हैं अनुमान से प्राचीन बासी बन्य जाति के हैं जो अब तक बहुधा पर्व्वतों में पाये जाते हैं अरियान अर्थात् चार वर्ण के लोग हिंदुस्तान में उत्तर और पश्चिम अर्थात् बायव्य कोण से आये हैं यद्यपि बहुधा हिंदुस्तान में बसे परंतु तौ भी कुछेक उनमें से सम्पूर्ण प्रदेशों में फैल गये ॥

मुसलमानों की चढ़ाई के कारण अरब ईरान और

अफगानिस्तान के बासी हिंदुस्तान में बहुत से आये जिन की सन्तति भिन्न २ भागों में पाई जाती हैं पश्चिमी किनारे पर पारसी बहुत हैं जो आदि में पारस से आयेथे यूरोपियनों की सन्तति के लोग भी बहुधा शहरों में पाये जाते हैं ॥

[२६] बोलियों का वर्णन ॥

बिंध्याचल पहाड़ के दक्षिणी बहुत से देश उन जातों से बसे हैं जो द्रबिड़ भाषा को अनेक २ प्रकार से बोलते हैं द्रबिड़ भाषा की मूल चार भाषा अर्थात् तामील - तिलगू मलायलम और कनारीज़ हैं अर्य्यन बासियों ने संस्कृत भाषा को प्रसिद्ध किया जो प्राचीन बासियों की भाषा ओं के साथ मिलाई गई और इसी कारण से बङ्गाली - उ-ड़िया - हिंदी - मरहटी - गुजराती और सिन्धी भाषा उत्पन्न हुई हैं चढ़ाई करने वाले मुसल्मानों ने बहुत से अरबी और फारसी शब्दों को मिलाया है इस्से एक मि-लीहुई भाषा बनगई जो हिंदुस्तानी या उर्दू अर्थात् लश्करी भाषा कहलाती है हिंदुस्तान के बहुधा भागों में अब अंगरेज़ी भाषा भी लिखी जाती है और वह अधिकार प्राप्त करती जाती है जो पहले संस्कृत को था ॥

[२७] रीति और चलन का वर्णन ॥

बङ्गाली नाटे निर्व्वल और डर्पोक होते हैं परंतु चा-तुर्य्यता युक्त और परिश्रमी भी हैं राजपूत और उत्तर की कुछेक जातें उच्च देह और शूर बीर होते हैं ॥

दक्षिणी जातों में से तामील जाति अपने परिश्रम और उच्चपदाभिलाषी होने के कारण उत्तम हैं हिंदू शुद्ध प्रकृति और आतिथेय और सम भाव हैं और अपने

घराने वालों पर दयालु होते हैं और मिथ्या बादी और स्वार्थी और झगड़ालू इत्यादि बातें उन में अब गुण हैं धन की प्रीति रखते हैं परंतु कभी २ उस धनको अज्ञानता से खर्च करते हैं और स्त्रियों की अप्रतिष्ठा करते हैं और उन को मूर्खता ही में रखते हैं परंतु थोड़े दिनों से स्त्रियों की शिक्षा अच्छे २ बुद्धिवान लोगों में होती जाती है हिंदुस्तान में अनेक जातों का होना आपत्ति का मूल है वह बिद्या और चातुर्य्यता की वृद्धि को रोकती हैं और मनुष्यों को निर्दय करती हैं और बहुधा झगड़ों का मूल होती हैं ॥

[२८] परिश्रम और व्यापार और विद्या का वर्णन ॥

परिश्रम

खेती करना लोगों की मूल जीबिका है सींचनें में वे बड़ी बुद्धिमत्ता जतलाते हैं परन्तु खाद का प्रबन्ध नहीं जानते हिंदू मलमल रेशम और शालों के कारण प्राचीन काल से प्रसिद्ध हैं परन्तु जब यूरप में कलों का प्रचार हुआ है तब से उन की हस्त कृत चातुर्य्यता में बड़ी हानि हुई है ॥

व्यापार ॥

और देशों से आनेवाला माल रुई के कपड़े और ऊनी असबाब चाकू कैंची आदि और शीसे के पात्र और किताबें हैं नील - अफीम - रेशम - रुई - शोरा - शक्कर तेलकाबीज - मसाले - चमड़े - चाह - कहवा - यहां से और देशों को जाते हैं दूसरे देश का ब्यापार मुख्य करके इंगलिश्तान और चीन के साथ होता है ॥

अफीम और रुई चीन को भेजी जाती है और अन्य बहुतसा माल इंगलिश्तान को ॥

विद्या ॥

हिंदुस्तान के वासी पढ़ने के अनुरागी हैं परन्तु शुद्ध विद्या कम रखते हैं ॥

[२९] मत का वर्णन ॥

प्राचीन वासी जिन्नों को पूजते थे और इस देश के बहुधा भागों में वह पूजा वर्त्तमान है चारों वर्ण के लोग इन्द्र अग्नि, चन्द्र, सूर्य्य इत्यादि देवताओं को पूजते थे तदनन्तर नये २ देवता इतने कल्पना किये गये जिनकी संख्या तेतीस किरोड़ हुई और बैल, गाय, चील और सर्प भी पवित्र समझे जाते हैं हिंदुस्तान वासियों के $\frac{1}{10}$ के लगभग मुसल्मान हैं पश्चिमीय तट पर ईरान के अग्नि पूजकों में से कुछेक पारसियों की सन्तान के लोग हैं ईसाई मत हिंदुस्तान के भिन्न भागों में वृद्धि पाता जाता है ॥

[३०] हिंदुस्तान के प्राचीन राज्यों का वर्णन ॥

मुसल्मानों की चढ़ाई से पहिले हिंदुस्तान कई पृथक् २ राज्यों में विभाग किया गया था ॥

उत्तर के राज्य ॥

मगध जिसकी राजधानी पाली बोथरा थी ॥

अवध या अयोध्या जिसकी राजधानी घाघरा नदी पर अयोध्या थी ॥

कन्नौज जिसकी राजधानी गङ्गा नदी के निकट कन्नौज थी ॥

मथुरा जिस की राजधानी यमुना नदी पर मथुरा शह्र था ॥

इन्द्रप्रस्थ या देहली जिसकी राजधानी पहले हस्तनापुर थी उसके पीछे इन्द्रप्रस्थ हुआ जो वर्त्तमान दिल्ली नगर के समीप था ॥

मध्य हिंदुस्तान के राज्य ॥

मालवा जिसकी राजधानी उज्जैन थी ॥

तिलंगाना जिसकी राजधानी वारंगल थी ॥

ईशान कोण के राज्य ॥

तापती नदी के दच्छिण महाराष्ट्र और कृष्णा नदी के दच्छिण कर्नाटक और उसके दच्छिण अरादिसं ॥

अग्नि कोण के राज्य ॥

चोला अर्थात् सूरा मण्डलाम जिस की राजधानी कांची था उसको अब कंजिवरम कहते हैं ॥

पाण्डिया जिस की राजधानी मधूरा थी ॥

[२१] मुग़लों के राज्य के भागों का वर्णन ॥

उत्तरीय हिंदुस्तान ॥

कश्मीर, गढ़वाल और नेपाल ॥

मुख्य हिंदुस्तान ॥

सिन्धु, कच्छ, गुजरात, लाहौर, अजमेर, देहली, आगरा, मालवा, अवध, विहार, बंगाला और उड़ीसा ॥

डेकिन ॥

खान देश, औरंगाबाद, बीजापुर, गोंडवाना, बेडर, हैदराबाद, बरार और उत्तरीय सरकार ॥

दच्छिणीय हिंदुस्तान ॥

किनारा, मलावार, मयसूर, बालाघाट, सेलीन, बारह महल, कार्यबिटूर, कर्नाटक, कोचीन और ट्रावङ्कोर ॥

[२२] वर्त्तमान भागों का वर्णन ॥

हिंदुस्तान के अब तीन भाग हैं ॥

पहला भाग अँगरेज़ी अमल्दारी ॥

दूसरा रच्छित राज्य ॥

तीसरा स्वतंत्र और अन्य देशीय राज्य ॥

अंगरेज़ी अमल्दारी का वर्णन ॥

सरकार ब्रटेनिया के देश तीन बड़े हातों और कई सूबों में विभाग किये गये हैं हातों में नव्वाब गवर्न्नर बहादुर और सूबों में साहिब चीफ़कमिश्नर बहादुर राजशासन करते हैं ॥

बङ्गाल हाते के पूर्व्वीदेश बङ्गाले के श्रीयुत नव्वाब लफ़्टिनेण्ट गवर्न्नर बहादुर के स्वाधीन हैं जिन का मुख्यस्थान कलकत्ता है और मध्य के देश जोकि पश्चिमोत्तरीय देश कहलाते हैं पश्चिम देशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लफ़्टिनण्ट गवर्न्नर बहादुर के आधीन हैं जिन का मुख्य स्थान इलाहाबाद है ॥

पंजाब के नव्वाब लफ़्टिनण्ट गवर्न्नर बहादुर का मुख्यस्थान लाहौर है ॥

बम्बई और मंदराज़ हाते के जुदे २ नव्वाब गवर्न्नर बहादुर हैं ॥

और अवध सिन्धु नागपुर और ब्रटेनी ब्रह्मा और कुछ और सूबे जात साहिबान चीफ़कमिश्नर बहादुरों के आधीन हैं और बङ्गालहाते का पश्चिमोत्तरीय भाग अर्थात् पंजाब लाहौर के श्रीयुत लफ़्टिनेण्ट गवर्न्नर बहादुर के आधीन है ॥

ये सब श्रीयुत नव्वाब गवर्न्नर जनरल बहादुर के आज्ञावर्ती हैं सरकारी अमल्दारी नौलाख मील वर्गात्मक से अधिक है और उस की आबादी १४ किरोड़ के लग भग है ॥

[२३] रक्षित देशों का वर्णन ॥

नीचे लिखेहुए देश निज करके रक्षित हैं ॥

बंगालहाते के आज्ञावर्ती ॥

कश्मीर राजपूताना ग्वालियर रीवां इन्दौर भूपाल और निज़ामुल्मुल्क के देश ॥

बम्बई हाते के आज्ञावर्त्ती ॥

गुज़रात और कच्छ ॥

मन्द्राज हाते के आज्ञावर्त्ती ॥

उड़ीसे की जागीरैं मैसूर कोचीन और ट्रावङ्कोर ॥

स्वतंत्र राज्यों का वर्णन ॥

हिमालय पहाड़ पर नैपाल और भूटान स्वतंत्र राज्य हैं ॥

अन्यदेश वालों के स्वाधीन देशों का वर्णन ॥

अन्य देशवालों के अधिकार में कुछ पाण्डेचरी कर्नाटक के किनारे पर फ्रांसियों के अधिकार में है और गोआ पश्चिमी किनारे पर पुर्त्तगीज़ों के अधिकार में है ॥

[२४] पूर्वी देशों का वर्णन ॥

बंगाला

बङ्गाले की उत्तर सीमा नैंपाल और भूटान्ट है और पूर्व्वसीमा आसाम और ब्रह्मा दक्षिण सीमा बङ्गाले का खाल और पश्चिम सीमा बिहार है ॥

धरातल

बङ्गाले का मध्य बड़ामैदान है जो गङ्गानदी के उस ओर के बहावसे बनगया है पूर्ब्बी और नैर्ऋतीय सीमा पर्ब्बत स्थाली हैं ॥

नदी

गङ्गा और ब्रह्म पुत्र नदी के बहुत से सोतों से बङ्गाला कटा हुआ है गङ्गानदी का पश्चिमी सोता जिस को हुगली कहते हैं सागरटापू के पास समुद्र में प्रवेश करता है ॥

पैदा वारियों का वर्णन ॥

हिंदुस्तान में बङ्गाला अत्यन्त पैदावर सूबा है वहां की पृथ्वी हलकी है परन्तु बर्षाऋतु की बढ़ियारों से जो बच रहता है वह उस को बहुत ही पैदावार करता है ॥

[२५] दक्षिणी देश जोकि हुगली नदी के पूर्व में हैं ॥

कलकत्ता जो ब्रटेनी हिंदुस्तान की राजधानी है वह हुगली नदी पर पूरब में सब से बड़ा वाणिज्य स्थान है सन् १६८६ ईसवी में जब पहिले ही पहल साहिबान अंगरेज़ बहादुर वहाँ बसे तब वह एक छोटा सा गांव था अब उस की बस्ती चारलाख से अधिक है अगणित उत्तम२ इमारतों के कारण से कलकत्ता कभी २ महल सराओं का शहर कहलाता है वह फोर्ट वलियम किले से रक्षित है जो बड़ा विस्तृत है ॥

कलकत्ते के उत्तर को भागीरथी नदीपर पलासी एक छोटा सा गांव है जिस के समीप श्रीयुत लार्ड क्लैव साहब बहादुर नें एक बड़ी विजय से सन् १७५० में बङ्गाले का अधिकार प्राप्त किया ॥

[२६] मुख्य ढ़ाके का वर्णन ॥

मुख्य ढ़ाका जो ढ़ाकाजलालपुर और मेगना नदी के मध्य में वर्त्तमान है वह गङ्गा नदी और ब्रह्मपुत्र के सोतों से कटा है उस में बड़ा शहर मध्य के समीप ढाका है जो मुसल्मानी राज्य में राज धानी था और अब भी बड़ा शहर है एक समय में वह उत्तम मल मलों के कारण प्रसिद्ध था ॥

तपरा के अग्निकोण में और बङ्गाले के खाल के उत्तर और पूर्वी किनारे२ चटगांव वर्त्तमान है वह उर्व्वरा भूमि का पर्व्वती ज़िला है परन्तु उस में जंगल बहुत है और उस में मुख्य नगर चटगांव या इसलामाबाद चटगाङ्ग नदी पर वर्त्तमान है ॥

उत्तरी ज़िले ॥

सिलहट कासियापर्व्वत और स्वतंत्र टिपरा के मध्य में है मैमिनसिंह के उत्तरीय पर्व्वतों में गारू बसते हैं ये

लोग तातारी सन्तति में से एक वन्य जाति हैं जो पहिले अपने सरदारों की लासें के साथ हिंदुओं के सिर जलानें के लिये उन को पकड़ ले जाया करते थे कासिया लोग जो अग्निकोण में बसते हैं तातारी सन्तति वालें से सम्बन्ध नहीं रखते और ऐसे वन्य भी नहीं हैं ॥

[४७] आसाम का वर्णन ॥

सूबा आसाम बङ्गाले के ईशान कोण में है उस की पृथ्वी बहुत लम्बी सकड़ी और नीची है जिसमें से ब्रह्मपुत्र नदी और बहुत सी छोटी २ नदियां बहती हैं परंतु मध्य के भाग अत्यन्त नीचे और बहुधा जल की बाढ़ों से आच्छादित रहते हैं उत्तरीय और दक्षिणीय सीमा पहाड़ी हैं ॥

सुवर्ण का चूर्ण बहुतसी नदियें की बालू के साथ मिला हुआ पाया जाताहै बहुधा देश जंगलोंसे घिराहुआ है वहाँ बहुत उत्तम चाह उत्पन्न होती है आसाम के मुख्य दो भाग अर्थात् पूर्बी और पश्चिमी आसाम हैं प्रसिद्ध नगर गोहाटी पश्चिम में ब्रह्म पुत्र नदीपर और नोगाङ्ग मध्य के समीप है ॥

राज शाही के वायव्य कोण में एक छोटा सा ज़िलअ-माल्दा है उस में मुख्य स्थान माल्दा है इस ज़िले में गौर के खंडेरे हैं जो किसी समय में बङ्गाले की चमत्कारी राजधानी था ॥

[४८] पश्चिमी ज़िले जो गंगानदी के दक्षिण हैं ॥

मुर्शिदा बाद की पूर्बी सीमा गङ्गानदी है जो उस को माल्दा और राजशाही से जुदाकरती है इस ज़िले की पृथ्वी उर्बरा है और इस में रेशम बहुत उत्पन्न होता है भागीरथी नदीपर मुख्य नगर मुर्शिदाबाद है जो पूर्ब्ब काल में बङ्गाले की राज धानी था कासिम बाज़ार जो एक समय रेशमी ह-

सूक्ष्त वस्तुओं के कारण प्रसिद्ध था मुर्शिदाबाद के पास है दक्षिण ओर बरहमपुर नदी पर सेना की छावनी है॥

भागीरथी नदी के पश्चिम वर्द्धवान है जो हिंदुस्तान में अत्यन्त पैदावार ज़िला गिना जाता है दमोदा और दूसरी नदियों से वह आर्द्र है दमोदा नदी पर मुख्य नगर वर्द्धवान है जिस में राजा का स्थान है भागीरथी के पूर्व ओर कलना नदिया और कटुआ हैं मुसल्मानो की चढ़ाई के समय में नदिया बङ्गाले का राजधानी था॥

वर्द्धवान के दक्षिण हुगली है जिस की पूर्बी सीमा हुगली नदी है इस ज़िले की पृथ्वी उर्व्वरा है और वहां खेती बहुत होती है इस ज़िले में मुख्य नगर हुगली इसी नाम की नदीपर है कलकत्ता बसने से पहले साहिबान अंगरेज बहादुर की यहां एक कोठी थी चंसरा जो हुगली नदीपर है वह पहले डच की बस्ती थी चन्द्र नागौर जो चंसरा के दक्षिण है वह फ्रांसीसियों के अधिकार में है और दक्षिण ओर श्रीराम पुर है जिस को थोड़े दिनों से डेंसनें साहिवान अंगरेज़ बहादुर को दिया यह स्थान पहलेही पहल आनेंवाले बैपटिष्ट पादरी केरी साहिब बहादुर और मार्शमन साहिब बहादुर और वार्ड साहिब बहादुर के रहने के कारण प्रसिद्ध है॥

[२९] उड़ीसे का वर्णन॥

उड़ीसा बङ्गाले के खाल के पश्चिमी और उत्तरी किनारेपर चिलका झील से सोवनरेका नदी के दहाने तक चलागया है यह नदी बङ्गाले और उड़ीसा के मध्य की सीमा है॥

आब हवा

आब हवा गरम और रोगद है॥

प्रजा

उड़िया लोग जो किनारे पर रहते हैं ब्राह्मण्य हैं और मुख्य पर्व्वती जातें उत्तर में कोल और दक्षिण में खोंध हैं ॥

भाग

किनारा नीचे लिखेहुए ज़िलों में विभाग किया गया है उत्तर में बालेश्वर और मध्य में कटक और दक्षिण मेंपुरी ॥

बालेश्वर बन्दर है ॥

महा नदी पर मुख्य स्थान कटक है ॥

पुरी जगंनाथ के मंदिर के कारण प्रसिद्ध है ॥

महानदी पर मुख्य नगर संभल पुर समुद्र से दूर है ॥

मध्य का देश बहुत से लाल गुज़ार ज़िमींदारों के स्वाधीन है ॥

[४०] विहार ॥

गङ्गानदी के दोनों किनारों पर बङ्गाले के पश्चिम बड़ा और पैदावार सूबा विहार है ॥

भाग

गङ्गानदी के दोनों ओर भागलपुर और मुंगेर और उत्तर तिरहुत और सारन और दक्षिण में पटना बिहार और शाहाबाद हैं ॥

पटना

गङ्गानदी पर मुख्य नगर पटना बड़ा विस्तृत स्थान है पटने केपश्चिम गङ्गानदीपर दानापुर फौज की बड़ी छावनी है

विहार

मुख्य नगर गया मध्य के समीप तीर्थ स्थान है जो गौतम बौद्ध काउत्पत्ति स्थान अनुमान किया जाता है नैऋत्यकोण में शेर घाटी है ॥

[४१] बंगाले की दक्षिणी और पश्चिमी सीमा ॥

बङ्गाले के पश्चिम की ओर कई पर्व्वती ज़िले हैं जिनको

उत्तर सीमा बिहार और दक्षिण सीमा उड़ीसा है पूर्वोक्त ज़िले साहिबान एजंट बहादुर के आधीन हैं जिनका नियत होना श्रीयुत नव्वाब गवर्न्नर जनरल बहादुर से है उनमें से मुख्य २ ज़िले पूर्व्व में पुरालिया और पायर मध्यमें रामगढ़ और छोटा नागपुर और पश्चिम में पाला मऊ हैं ॥

ज़िलअ रामगढ़ में प्रालिया और हज़ारी बाग मुख्य स्थान हैं ॥

मध्य के सूबे

नागपुर का सूबा और सागर और नर्मदा के प्रदेश सन् १८६१ में मध्य सूबों के नामसे संयुक्त कियेगये ॥

बरार अर्थात् नागपुर उड़ीसा के नैऋत्यकोणमें बड़ामध्य का देश है जिसकी उत्तर सीमाज़िलअ सागरऔर नर्म्मदा और पश्चिम सीमा निज़ा मुल्मुल्क का देश है ॥

वायव्य कोण में मुख्य नगर नागपुर दल दली ढाल में है सीता वल्दी के पहाड़ों पर सरकारी रज़ीडंटी और किले हैं जिन से राजधानी पर चोट पहुंच सक्ती है फौज की छा-मनी उस् कामटी स्थान में है जो ईशान कोण में ९ मील पर है सागर और नर्मदा के प्रदेशों का बड़ा ज़िला मध्य हिन्दुस्तान नर्म्मदा के दोनों किनारों पर वर्त्तमान है ॥

शहर

बायव्यकोण में सागर है नर्मदा के निकट जब्बल पुर इस कारण प्रसिद्ध है कि वहां ठगों के बालकों के लिये हस्तकृत वस्तु बनानें का मदरसा नियत हुआ है नैऋत्यकोण में नर्मदा नदीपर होशङ्गाबाद है ॥

[४२] अवध ॥

सूबह अवध नैपाल के दक्षिणओर पश्चिमी भाग और

गङ्गानदी के मध्य में है इस सूबे में ब्राह्मण बहुत हैं राज पूत उन से कम और चढ़ाई करने वा पठानों की सन्तति के मुसल्मान भी बहुत हैं वहां हिन्दुस्तानी भाषा प्रचलित है अवध के लोग बहुत लम्बे और लड़नेवाले होते हैं ॥

नगर

गोमतीनदी पर लखनऊ बड़ा राज धानी नगर है ॥

पूर्व्व की ओर घाघरानदी के समीप फैज़ाबाद पहली राजधानी है उस के समीप प्राचीन राजधानी अवध वा अयोध्या के खंडेर हैं ॥

[४३] पश्चिमोत्तरीय देश ॥

पश्चिमोत्तरीय देश की उत्तर सीमा के वे ज़िले हैं जो हिमालय पर्व्वत पर दूर तक चलेगये हैं और पूर्व्वी सीमा बिहार और दक्षिणी सीमा रीवां बुंदेलखण्ड और ग्वालियर और पश्चिमी सीमा राज पूताना है इस देश की पृथ्वी बहुधा सम धरातल है जिस में गङ्गा और यमुना नदियां बहुतसी सहायक नदियों सहित बही हैं अनाज - शक्कर - अफ़ीम और नील - मुख्य वनस्पति पैदावार हैं पृथ्वी की भेज सरकार को ज़िमींदारों से नहीं मिलती किंतु गांवों सेही मिलती है बस्ती बहुत सघन है बहुधा हिन्दी और उर्दू भाषा बोली जाती है पश्चिमोत्तरीय देश अर्थात् आईनी ज़िले मुख्य पांच बड़ेभाग अर्थात् कमिश्नरियां में विभाग कियेगये हैं पूर्व में बनारस मध्य में इलाहाबाद आगरा और रुहेलखण्ड और वायव्यकोण में मेरठ ॥

[४४] किस्मतों और बड़े नगरों का वर्णन ॥

गङ्गानदी के दोनों किनारों पर किस्मत बनारस है जो नीचे लिखेहुए ज़िलों में विभाग किया गया है घाघरा नदी

के उत्तर में ज़िलअ गोरखपुर और मध्य में ज़िलअ आ-ज़मगढ़ और जौनपुर गाज़ीपुर और बनारस और गङ्गानदी के दक्षिण ओर ज़िलअ मिरज़ापुर है ॥

नगर

गङ्गानदी के तटपर बनारस अर्थात् काशी एक प्रधाननगर है जिस में हिंदू जाति के हज़ारों यात्री अन्य २ देशों से आया करते हैं ॥

किस्मत इलाहाबाद

किस्मत इलाहाबाद में मुख्य नगर इलाहाबाद है जिसको हिन्दू प्रयाग कहते हैं वह गंगा और यमुना नदी के संगम पर है और अब पश्चिम देशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब गवर्नर जनरल् बहादुर का मुख्यस्थान है ॥

किस्मत आगरा

इस किस्मत में बड़ा नगर आगरा यमुनानदी के तट पर बसता है पहले देहली जबतक मुगलों की राजधानी नहुई थी तबतक यहीराज धानी था ॥

किस्मत रुहेल खण्ड

इस् किस्मत का रुहेलखण्ड नाम पठानों की एक रुहेला जाति से हुआ है जिसने कि उसको विजय किया था इस में बड़ा नगर मध्य के समीप बरेली है ॥

किस्मत मेरठ

इस् किस्मत में मेरठ नगर गंगा और यमुनानदी के ठीक मध्य अर्थात् अन्तर बेद में है इस में मुल्की और जंगी हाकिमों की बड़ी छावनी है जिस् स्थान से गंगानदी पर्ब्बतों से निकलती है वहां हरिद्वार नगर है यह स्थान मेले के

कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है वहां तीर्थ के कारण बहुत यात्री जाते हैं ॥

[४५] पंजाब का वर्णन ॥

पंजाब वास्तव में वह प्रदेश है जो पांच नदियां अर्थात् झेलम-- चिनाब-- रावी--ब्यासा और सतलज से उर्वरा है परन्तु अब यह नाम उस सम्पूर्ण बड़े त्रिभुज खण्ड का है जो हिन्दुस्तान के वायव्यकोण में है पंजाबकी उत्तर सीमा काश्मीर और पश्चिम सीमा सुलैमान पर्वत और पूर्व और अग्निकोण की सीमा सतलज नदी और घर्रा नदी है थोड़े दिनों से देहली के ज़िले पंजाब के गवर्न्मेंट के आधीन किये गये हैं ॥

धरातल ॥

पंजाब के उत्तरीय भाग पर्वती है और कहीं २ इन में प्रफुल्लित पर्वतस्थली हैं जिनके पर्वत की श्रेणी झेलम नदी के पूर्व की ओर से सिंधु नदी के उसपार तक चली गई है इस देश का नीचेका भाग बड़ा मैदान है जिसमें सिंधु नदी और पूर्वोक्त पांचों नदियां बहती हैं ॥

बस्ती

उस में सिक्ख और पठान और इन जाटों की बस्ती हैं जो राजपूत जात हैं वे लोग बहुधा दृढ़ और लड़ाके हैं दो तिहाई के लगभग मुसल्मान हैं और एक तिहाई में हिंदू और सिक्ख लगभग बराबर के हैं ॥

महाराज रंजीतसिंह के आज्ञावर्त्ती सिक्खों ने आसपास के कई ज़िलों को विजय किया और उक्त महाराज के मरने के पीछे उन सेनाओं ने सरकारी देश पर धावा किया और फल उसका यह हुआ कि उनका देश श्रीयुत सरकार बहादुर के राज्य में संयुक्त हुआ ॥

[४६] किस्मतों का वर्णन ॥

पूर्व में किस्मत जलन्धर और लाहौर ॥
उत्तर में झेलम और पेशौर ॥
नैऋत कोण में लइया और मुलतान और आग्नेय कोण में देहली ॥

नगर

रावी नदीके पास बड़ा नगर लाहौर है जो एक समय में मुग़लों के बादशाह की राजधानी था पूर्व्व की ओर रावी और ब्यासा नदियों के ठीक २ मध्य में सिक्खों का पवित्र स्थान अम्रतसर है जो बड़ा व्यापार स्थान है ॥

झेलम और चिनाब नदियों के बीच गुजरात है जहां साहिबान अंगरेज़ बहादुर ने सिक्खों को अन्त में बिजय किया ॥

यमुना नदीपर दिल्ली है यह प्राचीन समयमें हिंदुओं की राजधानी था तदनन्तर मुग़ल बादशाहों की राजधानी रहा

जिस स्थान पर सिन्धु नदी काबुल नदी से सङ्गम करती है वहां अटक है और सिंधु नदी के पार उतरने का मुख्य मार्ग है वायब्य कोण में पेशावर है ॥

दक्षिण ओर चिनाब नदीके समीप बड़ा नगर मुलतान है

सतलज के इस ओरके देश

सतलज नदी के दक्षिण ओर की सरकारी अमल्दारी चार ज़िलों अर्थात् फीरोज़पुर-- अम्बाला-- लुधियाना और कैथल में बिभाग की हुई है यह सब साहिब चीफ़ कमिश्नर बहादुर के आधीन हैं ॥

[४७] बम्बई हाता ॥

बम्बई हाते में दक्षिण के पश्चिमी ज़िले और गुजरातका

एक भाग और सम्पूर्ण सिंधु देश मिला है सिंधु देश जोकि साहिब कमिश्नर बहादुर के आधीन है उसके विशेष बम्बई हाते की उत्तरीय सीमा पर गायकवार देश हैं और पूर्वी सीमा पर निज़ामुल्मुल्क के देश हैं और दक्षिणीय सीमा पर मन्दराज और पुर्त्तगीज़ों की अमल्दारी और पश्चिमी सीमा पर अरब का समुद्र है ॥

इस हातेका क्षेत्रफल अड़सठहज़ार मील वर्गात्मक और वस्ती एक किरोड़ के लगभग है ॥

धरातल

समुद्र के किनारे की धरती ऊंची नीची है और दक्षिण के पश्चिमी ज़िले की समधरातल पृथ्वी पश्चिमी घाट के द्वारा जुदी होती है और सिपरमती-माही-नर्म्मदा और तापी ये नदियां उत्तरीय ज़िलों में बहकर खम्भात के खाल में गिरती हैं ॥

इस हाते में १४ कलकूरियां अर्थात् ज़िले हैं

समुद्र के किनारे पर बम्बई उत्तर में उत्तरी कान कान या ताना--सूरत--भड़ौंच--अहमदाबाद और केरा पूरब में ख़ानदेश और अहमदनगर--नासिक--पूना--और सितारा दक्षिण में दक्षिणी कान कान शोलापुर और धाड़वाड़ और बेलगाँव ॥

[४८] किस्मतों और मुख्य नगरों का वर्णन ॥

एक छोटे टापू पर बम्बई एक अच्छा बन्दर है और साल् सट टापू जो उससे बड़ा है उससे एक बांध के द्वारा मिलाया गया है वह भी उसी प्रकार महा द्वीप से मिलाया गया है यह बन्दर हिंदुस्तान के सब बन्दरों से अच्छा है वहां जहाज़ बनाने के वास्ते बड़े २ डाक हैं—(डाक समुद्र के किनारे जहाज़ बनाने या जहाज़ों को उत्पात से बचने के लिये एक

विश्राम स्थान है) यहाँ व्यापार बहुत होता है मुख्य कर पारसी लोग करते हैं ॥

सूरत उत्तरीय कान कान से भडौंच तक है मुख्य स्थान सूरत तापती नदी पर एक प्राचीन और सघन बसा हुआ नगर है ॥

विभाग

खम्भात के खाल के पूर्व्व भड़ौंच है उस में मुख्य नगर नर्म्मदा नदी पर भड़ौंच है ॥

सिपरमती नदी और खम्भात के मुख्य पश्चिम ओर अह दाबाद है सिपरमती नदी पर अहमदाबाद नगर है जो मुसल्मानों के समय में गुजरात का राजधानी था खानदेश एक बड़ा ज़िलअ ज़िसमें तापती नदी बहती है बर्त्तमान है उसमें जङ्गल बहुत है भील और जङ्गली पठान रहते हैं ॥

खानदेश के दक्षिण अहमदनगर और नासिक से मिल कर एक बड़ा ज़िला बना है मुख्य स्थान अहमदनगर बम्बई के पूरब में है और बायव्य कोण में नासिक एक स्थान है जिसको आसपास के हिंदू काशीपुरी से भी अधिक प्रतिष्ठा करते हैं यद्यपि उसके मंदिर बौद्ध मत वालों के हैं ॥

[४९] पूना ॥

पश्चिमी घाट के पूर्व्व ओर बम्बई के अग्निकोण में पूना है मुख्य नगर पूना बीमा नदी के सहायक पर है यह नगर पहले पेशवा जो मरहटों के सरदारों में से एकबड़ा सरदार था उसकी राजधानी था ताना के दक्षिण समुद्र के किनारे दक्षिणी कान कान है ॥

दक्षिणी कान कान के पूर्व्व एक बड़ा ज़िला सितारा है उसमें पश्चिम की ओर बड़ा नगर सितारा है यह थोड़े समय तक एक राजा का राजधानी था बायब्यकोण में महा-

बलेश्वर उसी नाम के पर्व्वतों की श्रेणी पर है उसपर अंग-रेज़ लोग शीतल वायु के कारण बहुत जाते हैं दक्षिण में बीजापुर या विजियापुर एक मुसल्मानी राज्य की उजिड़ी हुई राजधानी है ॥

शोलापुर सितारेके पूर्ब्बी भिन्न २ भागोंसे मिला हुआ है सितारा और शोलापुर के दक्षिण बेलगांव है ॥

धाड़वाड़ ज़िला बेलगांव और मयसूर के इलाके के मध्य में है ॥

[५०] सिन्ध ॥

सिंधु का सूबा उस देशसे मिला हुआ है जो सिंधु नदी के दक्षिणीय भाग के दोनों ओर है उसके वायव्य कोण में बलोचिस्तान है और पूर्व्व में राजपूताना और दक्षिण में कच्छ और हिन्द का सागर है ॥

धरातल

यह देश एक बिस्तृत मैदान है केवल उसमें कहीं २ नीचे पहाड़ हैं और उस में से सिंधु नदी बहती है जो वहां कई सोतों में विभाग होकर हर बर्ष आस पास के देशों को डुबाती है ॥

आब हवा

आब हवा शुष्क है और उष्ण ऋतु में उष्णता बड़ी आधिक्यता से होती है और बर्षा कम और अनियत है यह सूबा तीन ज़िलों में विभाग किया गया है पूरब में हैदराबाद और पश्चिम में किरांची और उत्तर में शिकारपुर ॥

नगर

हैदराबाद राजधानी सिंधु नदी के पूर्ब्बी सोतेपर है उसके समीप मियानी है जहां सर चार्लिस नेपियर साहिब बहा-

दुरने सिंधुके अमीरों को पराजय दी डेल्टा पर टट्टा प्राचीन राजधानी है वायव्यकोण में शिकारपुर व्यापार का स्थान है उसके समीप सकर सिन्धु नदी पर है पश्चिम की ओर के किनारे पर किरांची बड़ा बन्दर है ॥

मन्द्राज हाता

फोर्ट सेण्ट जार्ज के मन्द्राज हाते में इटानिया हिन्द के दक्षिणी प्रदेश संयुक्त हैं उसमें २१ कलक्टरियां हैं जिन का धरातल एक लाख, सैंतीस हजार, वर्गात्मक मील के लगभग और आबादी दो किरोड़, बीस लाख, के लगभग है

यह हाता मुगलों के राज्य के नीचे लिखे हुए सूबों से मिला है अर्थात् पूर्वी किनारे पर उत्तरीय सरकार और कर्नाटक और मध्यमें बालाघाट--सलीम--बारहमुहाल--कार्य बिटूर और पश्चिमी किनारे पर किनारा और मलाबार ॥

उत्तरीय सरकार

उत्तरीय सरकार में पांच जिले पूर्वोत्तरीय किनारे पर हैं उत्तर में गंजाम मध्य में बिजगा पट्टन और राजमंदिर और दक्षिणमें मूसलीपट्टन गंटर यहांके वासी तिलगू हैं ॥

जिलों का वर्णन

उड़ीसा के दक्षिण गंजाम है और उसी सूबेकी बुरी आब हवा का कुछ २ गुण रखता है इस में बड़ा स्टेशन चीका-कोल दक्षिण में समुद्र से थोड़ी दूर पर है दक्षिण की ओर कांगापट्टन और उत्तर की ओर मंसूर कोटा दोनों बंदर हैं

बिजगापट्टन का वर्णन

मध्यके समीप समुद्र के किनारे पर बिजगापट्टन व्यापार का बड़ा स्थान है उत्तर की ओर बिमली पट्टन बन्दर है समुद्र से दूर पश्चिम ओर बिजिया नगरम है ॥

राजमन्दिर के ज़िले में गोदावरी नदी बहती है समुद्र से कुछ दूर गोदावरी नदी पर राजमन्दरी नगर है कारङ्गा और काकी नाडा दो बन्दर हैं ॥

कृष्णा नदी के उत्तर मंसूलीपट्टन ज़िला है और दक्षिण में मंसूलीपट्टन बड़ा बन्दर है इस ज़िले के मध्य के समीप एलौर नगर कालीन के कारण प्रसिद्ध है ॥

कृष्णा नदी के दक्षिण गण्टर ज़िला है और वायव्यकोण में बड़ा नगर गण्टर है ॥

[५.२] कर्नाटक ॥

गंटर ज़िले से कन्याकुमारी के समीप तक कर्नाटक है उसके उत्तर में नोलौर ज़िला और उत्तरीय अर्काट है और मध्य में मन्दराज चिंगलीपट दक्षिणी अर्काट तंजोर तिर्चिनापली है मधूरा और टिनेविली ॥

धरातल

जो पृथ्वी कि तटपर है वह बहुधा सम है यद्यपि पहाड़ों की थोड़ी बहुत श्रेणियां भी हैं इस इलाके की पृथ्वी पूर्वी घाट की ओर क्रम२ से ऊंची है ॥

नदी

उत्तर में पनार नदी मध्यमें पालार और कावेरी दक्षिण में विजिया और ताम्रपर्णी हैं कावेरी अधिक सबसे बड़ी है और उसको दक्षिणी हिन्द के हिंदू पवित्र अनुमान कर ते हैं और वह समुद्र में कई दहानों से मिलती है जिन में उत्तरी दहाना कोलरून कहलाता है ॥

पृथ्वी

पृथ्वी बहुधा हलकी और रेतली है और वे ज़िले जिनमें नदियां बहती हैं प्रफुल्लित हैं तंजोर का जिला हिंदुस्तान के बड़े पैदावार ज़िलों में से एक है ॥

निवासी

नीलौर ज़िले में तिलगू भाषा है और शेष सूबों में तामील भाषा है ॥

[५३] नगर और भागों का वर्णन ॥

गण्टर के दक्षिण समुद्र के तटपर नीलौर ज़िला है और दक्षिण में पनार नदी पर नीलौर नगर और उत्तर में अंगोल है मध्य में चीतौर और दक्षिण में पनार नदी पर अर्काट जो मुसल्मानों की प्राचीन राजधानी कर्नाटक का सूबा था अर्काट के पश्चिम की ओर पलार नदीपर बीलौर है वहां पहले सरकारी सेना की बड़ी छावनी थी ॥

मन्दराज जो समुद्र के किनारे पर है वह इस हाते का राजधानी है और दक्षिणी हिंदुस्तान में सबसे प्रधान नगर है इसमें व्यापार बहुत होता है ॥

यद्यपि जहाज़ों का रक्षा स्थान नहीं है और समुद्र की थपेड़ों के कारण किनारे पर उतरने में कठिनता होती है ॥

मन्दराज बड़ी बस्ती है जिसको साहिबान अङ्गरेज़ बहादुर ने हिंदुस्तान में अपनी बनाई हुई मुख्य २ बस्तियों में पहलेही पहल बसाया सन् १६३९ ईसवी में क़िला और नगर बसाने के लिये सरकार ने थोड़ी सी पृथ्वी प्राप्त की थी और अब उस में उस के सम्बन्धियों सहित अनुमान सात लाख बीस हज़ार मनुष्यों की बस्ती है ॥

ज़िला चिंगलपट मन्दराज से मिला हुआ है और दक्षिण में पलार नदी के समीप चिंगलपट नगर और पश्चिम में पलार नदी पर कंजिवरम है जो चोला के राज्य का प्राचीन राजधानी था ॥

चिंगलपट के दक्षिणमें दक्षिणी अर्काट है और समुद्र पर पनार नदी के दहाने के समीप काडालोर अर्थात् फ़ोर्ट सेंट

डेविड बिलार नदीके दहाने के समीप दक्षिणमें पोर्टोनोवोहै

[५४] तंजोर का वर्णन ॥

तंजोर एक बड़ा बस्ता ऊआ और प्रफुल्लित ज़िला कावेरी नदी के डेल्टा पर है —(नदी के दो दहानों के मध्य की पृथ्वी को डेल्टा कहते हैं) कावेरी नदी के एक सोते पर तंजोर नगरहै जो पहले एक राजा का राजधानी औरपादरी स्वार्ट साहिब बहादुर के परिश्रम और उद्योग का मुख्य स्थान था कावेरी नदी पर पूर्ब की ओर काम्बे कोनम और मियावर्म हैं और समुद्रके किनारे पर चंकोवार और नीगा पट्टम हैं तंजोर के वायव्यकोण में कावेरी नदी के दोनों ओर ज़िला तिर्चिनापली है और तिर्चिनापली नगर सेना की छावनी कावेरी नदी पर है ॥

तिर्चिनापली के दक्षिण बड़ा ज़िला मधूरा है और उस में राजा टुरडोमान का इलाका मिला है विज़िया नदी पर मधूरा बऊत प्राचीन नगर है और उसमें बऊधा इमारतें उत्तम २ हैं और बायव्य कोण में डिंडीगल है और उसके समीप क़िलेदार पर्बत है रामनाद नगर अग्निकोण में एक नीचा रेतला इलाक़ा है ॥

रामेश्वराम टापू मधूरा से एक समुद्री पाम्बेन् नहर के द्वारा पृथक् किया गया है वहां यात्री बऊत जाते हैं ॥

टिनाविली हिंदुस्तानमें सरकारी राज्य का दक्षिणी भाग रेतीला ज़िलाहै पालंकोटा और टिनाविली पास २ हैं परंतु इन दोनों को ताम्रपर्णी नदी पृथक् करती है पूर्व में समुद्र के किनारे पर थूटीकोरन है जहांसे जहाज़ों पर रुई लादी जाती है ॥

[५५] मध्य के ज़िलों का वर्णन ॥

मन्द्राज हाते के मध्य के सूबे बालाघाट—बारह महाल

सलीम और कायंबिटूर हैं इन ज़िलों के विभाग में बिलारी कर्नल और कडापा उत्तर में हैं सलीम और कायंबिटूर दक्षिण में हैं ॥

धरातल

मध्य के ज़िलों की पृथ्वी मुख्य कर एक ऐसे सम धरातल से मिली है जिसकी ऊंचाई समुद्र के तलसे एक हज़ार फ़ुट से तीन हज़ार फ़ुट तक है वर्णन किये हुए ज़िले पूर्वी और पश्चिमी घाट और नीलगिरि से घिरे हुए हैं ॥

नदी

उत्तरीय भागों में टम्बद्रा और पनार अपनी सहायक नदियों सहित बहती हैं ॥

दक्षिणी भाग में पनार और कावेरी हैं ॥

आब हवा

उत्तरीय देशों की आब हवा शुष्क और उष्ण है और दक्षिणी ज़िलों में वर्षा बहुत होती है ॥

निवासी

कडापा--कर्नल और बिलारी के पूर्वी भाग के बासी तिलगू हैं और बिलारी के पश्चिमी भागों के वासी किनारी हैं सलीम और कायंबिटूर में बहुधा तामील बसते हैं ॥

भाग और नगरों का वर्णन

निज़ामुल्मुल्क और मयसूर के इलाके के मध्यमें बिलारी ज़िला है मुख्य बिलारी नगरमें पर्ब्बत पर एक किला है और पूर्ब्बकोण में गोटी नगर है उसमें भी एक पर्ब्बती किला है ॥

बिलारी और कडापा के मध्य में कर्नल ज़िला है टम्बद्रा नदी पर कर्नल नगर है जोकि कई सौ बर्ष तक दक्षिणी पठानों का राजधानी था पूर्ब्बी घाट के पश्चिम और कर्नल

के दक्षिण कडापा ज़िला है पनार नदी के सहायक पर मुख्य नगर कडापा है यह नगर बहुत दिनों तक पठानों की राजधानी था और उत्तर में कर्नूल है ॥

ज़िला सलीम

अर्काट के पश्चिम और मयसूर के दक्षिण सलीम नाम ज़िला है सेवा राय पर्व्वतों के समीप सलीम नगर बड़ा स्टेशन है ॥

मयसूर के दक्षिण और सलीम के पश्चिम कायंबिटूर ज़िला है पश्चिम ओर कावेरी नदी की सहायक नायल नदी पर कायंबिटूर नगर है नीलगिरि पर उटी कमण्डल है जहां अंगरेज़ लोग शीतल वायु और जल के कारण जाते हैं ॥

[५६] पश्चिमी ज़िले अर्थात् कनारा और मलाबार का वर्णन ॥

कनारा और मलाबार थोड़ा चौड़ा ज़िला गोआसे को चीन तक पश्चिमी किनारे पर है उसकी पूर्व्वी सीमा पर धाड़वाड़ और मयसूर और कायंबिटूर हैं ॥

धरातल

पश्चिमी घाट दोनों ज़िलों में होकर समुद्र की ओर गया है और उसमें स्थान २ पर टोकिरियां देता है समुद्र का किनारा बहुतसी छोटी २ खाडी और पानी की झकोलों के कारण दन्दानेदार हैं बहुतसी छोटी २ नदियां घाटों से नीचे को बहती हैं ॥

आबहवा का वर्णन

वहां की वायु आर्द्र है और हिंदुस्तान के बहुधा देशों की अपेक्षा उष्णता वहां सम है ॥

विभाग

उत्तरीय कनारे के दक्षिण दक्षिणी कनारा है उसमें मुख्य नगर मंगलौर है ॥

पर्व्वतीय प्रदेश मलाबार की उत्तर सीमा पर दक्षिणी कनारा और दक्षिण सीमा पर कोचीन है घाटों के ऊपर का प्रदेश वीनाद कहलाता है उसमें कहवा के खेत हैं और तिलीचरी एक बन्दर है जहां इलायची और चन्दनकी लकड़ी का कुछेक व्यापार होता है ॥

उत्तरमें सेनाकी छावनी किनानोर है दक्षिणमें कालीकट वह नगर है जहां पुर्त्तगीज़ लोग वास्कोडीगामा साहिब के साथ सन् १४९८ ईसवी में पहले पहल हिंदुस्तानमें उतरे॥

[५७] रक्षित देशों का वर्णन ॥

कश्मीर के राज्य में कश्मीर की रमणीय पर्व्वत स्थली और लाडू की कश्मीर संयुक्त है वहां एक प्रकार का बकरा होता है कि जिसके आभ्यन्तरीय बालों के शाल बनाये जाते हैं यहां की येही हस्त कौशलता बहुत प्रसिद्ध है ॥

नगर

कश्मीर की राजधानी अर्थात् श्रीनगर झीलम नदी पर है और इसके पूर्व्व में इसलामाबाद है कश्मीर के राज्य का पूर्व्वोत्तरीय भाग लाडक अर्थात् मध्य तिब्बत है इसकी राजधानी ली सिन्धु नदी की एक छोटी सहायक पर है सतलज के उत्तरीय भाग में बूसाहिर एक पर्ब्बतीय राज्य है और उसके सूबे से एक सूबा किनावर है ॥

कुमाऊं और सरकारी गढ़वालके अग्निकोणमें हिमालय पर गढ़वाल अत्यन्त पर्व्वतीय देश है उसी में गङ्गा और यमुना दोनों का उत्पत्ति स्थान है और वहाँ बहुत यात्री लोग जाते हैं ॥

नैपाल और भोटांट के मध्य में एक छोटा पर्ब्बतीय देश सिक्कम है वहां एक राजा का राज्य है जिस की राजधानी

तमलांग में है ॥ उसके दक्षिण ओर एक छोटासा ज़िला जिसमें दार्जिलिङ्ग है वह साहिबान अंगरेज़ बहादुर के आधीन है वहां यूरप निवासी लोग शीतजल और वायु के कारण विशेष करके जाते हैं ॥

[५८] रीवां ॥

रीवां की उत्तर सीमा पर इलाहाबाद और मिरज़ापुर के ज़िले और दक्षिण सीमा पर सागर और नर्म्मदा के देश हैं इस राज्य में मुख्य नगर रीवां वायव्य कोण में है ॥

बुंदेलखण्ड

बुंदेलखण्ड अर्थात् बुंदेलों का देश बड़ा विस्तृत इलाक़ा है उसकी उत्तर सीमा यमुनानदी और पूर्व रीवां और दक्षिण सागर और नर्म्मदा के देश और पश्चिम में ग्वालियर है ॥

यमुना नदी के आस पासके ज़िले अब सरकार अंगरेज़ के आधीन हुए हैं और बुंदेलखण्ड के शेष ज़िले खिराज गुज़ार अर्थात् कर देनेवाले राजाओं के आधीन हैं ॥

नगर

वायव्यकोण में झांसी और अग्निकोण में पन्ना है जिसके आस पास हीरे की खाने हैं ॥

धवलपुर

आगरे के दक्षिण एक छोटा प्रदेश धवलपुर है जिस को ग्वालियर से चम्बल नदी पृथक् करती है चम्बल नदी पर बड़ा नगर धवलपुर है ॥

भरथपुर

आगरे के पश्चिम भरथपुर है उसके दृढ़ क़िले को साहिबान अंगरेज़ बहादुर ने दो बार घेरा था परंतु अब वह टूट गया ॥

पटियाला

सरहिन्द में यह राज्य बहुत उर्व्वरा पृथ्वी का है सिक्खों के रक्षित राज्यों में से यह बड़ा राज्य लुधयाने के दक्षिण है इसमें पूरब की ओर बड़ा नगर पटियाला है ॥

भावलपुर

घरी नदी और राजपूतानेके मध्यमें भावलपुर का राज्यहै ॥

[५८] राजपूताना ॥

पश्चिमी हिन्द का एक विस्तृत भाग राजपूताना है उस के नाम रखने का यह कारण है कि वहां बहुधा राज पूत रहते हैं उत्तर सीमा भावलपुर और पूर्ब्बी सीमा भरथपुर और ग्वालियर और दक्षिण सीमा गायकवार का देश और पश्चिम सीमा सिंधु ॥

धरातल

अर्व्वली पर्ब्बत इस देश में होकर गया है और उस में पर्ब्बतों की उंचाई बहुत है परंतु इस देशके बहुधा धरातल में शुष्क मैदान हैं सिंधु की ओर बड़ा पश्चिमी बियाबानहै

पूर्ब्बोत्तरीय ज़िलों में चम्बल की सहायक बनास नदी बहती है और दक्षिणी ज़िलों का पानी लूनी नदी के द्वारा बाहर निकलता है ॥

यहां की मुख्य फसल सूखा अनाज है जब शेरशाह अफ़ग़ान ने इस देश पर चढ़ाई की और कठिन सन्मुखता उस से हुई तब उसने कहा कि एक मुट्ठी कोदों के कारण हम हिन्दुस्तान के राज्य को खोइ चुके थे ॥

निवासी लोग

वहां के राजपूत क्षत्री वर्ण होने का दावा करते हैं ॥

जोधपुर अर्थात् मारवाड़

यह देश नैऋत कोण में है और राजपूताने के सब राज्यों से बड़ा है मध्य के समीप एक जोधपुर उत्तम नगर राजधानी है ॥

जैसलमेर

जोधपुर के वायव्य कोण में एक शुष्क प्रदेश जैसलमेर है इसमें बड़ा शहर जैसलमेर है ॥

बीकानेर

जोधपुर के उत्तर में बीकानेर है दक्षिण और पश्चिमकी ओर बड़ा शहर बीकानेर है ॥

जैपुर

जोधपुर के ईशानकोण में जैपुर राजपूताने के नामी राज्य में से है जैपुर राजधानी हिन्दुस्तान के मध्य के समीप अत्यन्त उत्तम नगरों में से है ॥

उदैपुर अर्थात् मेवाड़

अर्व्वली पहाड़ों के आग्नेय कोण में उदैपुर का देश है उसकी पृथ्वी ऊंची और सम है उदैपुर राजधानी है वहां कुछ अच्छी २ संगमरमर की इमारतें बनी हैं ॥

प्राचीन राजधानी चीतौर वायव्य कोण में है ॥

[६०] ग्वालियर के देशों का वर्णन ॥

ग्वालियर के देश अर्थात् महाराजा सैंधिया बहादुर का राज्य कई भिन्न २ ज़िलों से संयुक्त है जोकि चम्बल और नर्म्मदा नदीके मध्यमें हैं इस राज्य में सूबे मालवे का एक भाग है उत्तर और पश्चिम को ओर उसको चम्बल नदी राजपूताने से पृथक् करती है उसकी पूर्व्वी और दक्षिणी सीमापर बुंदेलखण्ड सागर और नर्म्मदाके देश और इन्दौर हैं सूबा मालवा अफ़ीम के लिये प्रसिद्ध है ॥

नगर

उत्तर में ग्वालियर राजधानी है वहां एक पर्ब्बती क़िला है दक्षिण में चम्बल को सहायक सिप्रा नदी पर उज्जैन नगर है उसके समीप प्राचीन उज्जैन के खंडहर हैं यह नगर राजा विक्रमादित्य की राजधानी था और हिंदुओं के भूगोल कीमध्य रेखा प्रथम इसीपर होकर जाती थी,सेंधिया के देशों में नीमच शहर साहिबान अंगरेज़ बहादुर के आधीन है ऊल्कार के देश नर्म्मदा नदी के दोनों ओर भिन्न २ ज़िलों से मिले हुए हैं विंध्याचल पहाड़ों के उत्तर इन्दौर की राजधानी है और नैऋत कोण में मौ नगर सेना की छावनी है ॥

महाराजा सेंधिया के राज्य और नर्म्मदा के मध्य में भूपाल है इसमें होकर विंध्याचल की श्रेणी जाती है और बिटवा नदी की सहायक पर भूपाल राजधानी है ॥

[९१] निज़ामुल्मुल्क की अमल्दारी ॥

रक्षित देशों में से निज़ामुल्मुल्क का राज्य सबसे बड़ा और अत्यन्त प्रसिद्ध है उस की पूर्व्वोत्तरी सीमा नागपुर अर्थात् मध्य के सूबे और दक्षिणीय सीमा मन्दराज हाता और पश्चिमी बम्बई हाता है ॥

औरङ्गजेब बादशाहके मरने के पीछे दक्षिण का सूबेदार जो निज़ामुल्मुल्क के उपनाम अर्थात् राज्य का प्रबन्धकर्त्ता प्रसिद्ध था उसने अपने को मुग़लों के राज्य से स्वतंत्र प्रसिद्ध किया ॥

नगर

अग्निकोण में कृष्णा की एक सहायक नदी पर हैदराबाद राजधानी है यह बड़ा शहर कुछ अच्छी २ इमारात और तालाबों से प्रसिद्ध है ॥

हैदराबाद के समीप बुलारम और सिकन्दराबाद सेना की छावनियां हैं ॥

हैदराबाद से ६ मील पश्चिम की ओर गोलकण्डा नाम क़िला है उसमें निज़ामुल्मुल्क का ख़ज़ाना रहता है ॥

हैदराबाद के ईशानकोण में वारंगल है यह प्राचीन तैलिंगाने के राज्य की राजधानी था ॥

हैदराबाद के वायव्यकोण में बेदर है यह एक राज्य का राजधानी था वायव्यकोण में औरंगाबाद औरङ्गजेब बादशाह का चित्त रोचक स्थान था ॥

दौलताबाद औरंगाबाद के समीप है वहां पहाड़ पर एक दृढ़ क़िला है ॥

जलना सेना की छावनी औरंगाबाद के पूरब में है और उत्तर में असेई गांव जहां जनरल वेल्ज़िली साहब बहादुर ने महाराजा सेंधिया और राजा नागपुर की संयुक्त सेनाओं को पराजय दी थी ॥

उन ज़िलों के नगर जोकि थोड़े दिनों से सरकार के सुपुर्द हुए हैं ॥

उत्तर में एलिचपुर सेना की छावनी है जो पहले समय में बरार का मुसल्मानी राज्य था और उत्तर की ओर गावलगढ़ क़िला है जिसको पूर्वोक्त जनरल साहब ने विजय किया था एलिचपुर के नैऋत कोण में आगाम है जहां उक्त जनरल साहब बहादुर ने सेंधिया की सेना को दूसरी बार पराजय दी थी और अग्नि कोण में अमरावती नगरी है वहां रुई का व्यापार बहुत होता है ॥

[६१] बम्बई हाते के स्वाधीन रक्षित देश ॥

सिन्ध देश के उत्तर खैरपुर देश है और सिन्धु नदी के समीप उसी नाम का मुख्य नगर खैरपुर है ॥

कच्छ के खाल के उत्तर कच्छ एक लम्बा और सकड़ा

प्राय द्वीप है जिस को निमक की एक छथली झील जोरन कहलाती है वह सिन्ध से पृथक् करती है ॥

बहुधा पृथ्वी रेतली और बेहड है परंतु कोई २ भाग उर्व्वरा हैं उनमें फिटकरी बहुत निकलती है यहां की मुख्य बनस्पति पैदावार सूखा अनाज और रुई है घोड़े और गोरखर बहुत होते हैं ॥

वहां के वासी अनुमान से हिंदू और मुसल्मान बराबर २ हैं वे लोग बहुत दिनों से दूसरे देश वालों के साथ व्यापार करते रहे हैं इस देश में थोड़े से राजपूत सरदार राज्य करते हैं ॥

बड़ा नगर भुज मध्य के समीप है ॥

गायकवार के देश खम्भात के खाल के दोनों ओर सरकारी अमलदारी को लगभग घेरे हुए हैं बड़े २ भाग ये हैं कच्छ के खाल और खम्भात के खालके मध्य में काठियावार प्रायद्वीप और माही नदी के वायव्यकोण में माही कांठा है पूरब में रीवां कांठा और बरौदा खम्भात के पूरब है ॥

निवासी

निवासी बहुत मिले झुले हैं हाकिमों के घराने में से मरहटे हैं राजपूत--काठी--कुली--कुम्बी और अन्य जातों के लोग भी बहुत हैं वहां हिंदुओं का मत प्रसिद्ध है परंतु जैन लोग भी अन्य हिंदुस्तान के भागों की अपेक्षा बहुत हैं

नगर

माही नदी के पूरब गायकवार की राजधानी बरौदा बड़े व्यापार का स्थान है और उसी माही नदी के दहाने के समीप खम्भात है इस स्थान में पहले बहुत व्यापार होता रहा और काठियावार प्रायद्वीप के दक्षिण पट्टन सोमनाथ

है यह स्थान हिंदुओं के एक मन्दिर के कारण प्रसिद्ध है जिसको महमूद ग़ज़नवी ने लूटा था ॥

दक्खन के पश्चिम और सितारा के दक्षिण कोलापुर ज़िला है इसका बड़ा नगर कोलापुर है ॥

[६३] मन्दराज हाते के दक्षिण देश ॥

उड़ीसा की जागीरें कई छोटे २ ज़िलों से संयुक्त हैं जो सूबे उड़ीसा के ईशान कोण में हैं पूर्वी और पश्चिमी घाटों के मध्य दक्खिनी हिन्दमें मयसूर है उसकी धरती ऊंची और धरातल रूप है ॥

निवासी

इस देश की भाषा केनेरिज़ है ॥

हैदरअली के समय में मयसूर बहुत बलवान होगया था जब साहिबान अंगरेज़ बहादुर ने श्रीरंग पट्टन पर चढ़ाई की तब उसका बेटा टीपू सुल्तान यहां मारा गया ॥

विभाग

इस देश के भाग ये हैं पूरब में बंगलौर और दक्षिण में इसरागाम और ठेठ उत्तर और वायव्य कोण में चिटलड्रूग और नगर हैं ॥

बंगलौर

पूरब में बङ्गलौर मयसूर के साहिब कमिश्नर बहादुर का मुख्य स्थान है वहां सेना की बड़ी छावनी है और बागात के कारण प्रसिद्ध है ॥

इस्राग़ाम

इसमें मयसूर दक्खन की ओर है और राजा की राजधानी है श्रीरङ्गपट्टन कावेरी नदी के एक टापू पर है वह हैदरअली के घराने की राजधानी था ॥

चिटलड्रूग

इस् भाग के अग्निकोण में टम्कूर सुपरिन्टेंडेंट साहिब बहादुर के रहनेका स्थान है एक शहर और किला चितलड्रूग ईशानकोण में है ॥

नगर

इस् भाग में शिमोगा मध्य के समीप बड़ा ष्टेशन है टम्बदरा नदी पर उत्तर की ओर हरीहर सेनाकी छावनी और पश्चिम में नगर हैं ॥

कूर्ग

मयसूर के साहिब कमिश्नर बहादुर के स्वाधीन एक छोटा पर्व्वती ज़िला कूर्ग है यह थोड़े दिनों से सरकारी मुल्कों में संयुक्त होगया है इसमें बड़ा ष्टेशन मर्कारा है ॥

कोचीन

मलाबार के दक्षिण एक छोटासा राज्य कोचीन है इस् में साहल के समीप बड़ा शहर क्रीचुर है ॥

ट्राविंकोर

ट्राविंकोर एक उर्ब्बरा राज्य हिंदुस्तानकी दक्षिण और पश्चिम की हद्द है कोचीन और ट्राविंकोर में बहुतसे शाम देशके ईसाई और बीस हज़ार के अनुमान प्रोटिस्टेंट ईसाई हैं ट्राविण्ड्रम राजधानी दक्षिण में है और उत्तर में कोयेलान और उस्से उत्तर अलैपी है जहां से मिरच और लट्ठे दिसावर को जाते हैं और दक्षिण की ओर कुमारी अन्तरीप के समीप कायल नगर है ॥

[६४] स्वतंत्र राज्यों का वर्णन ॥

एक विस्तृत और तङ्ग नैपाल का देश कुमाऊं से सिक्कम

तक हिमालय में फैला हुआ है इसका राजधानी नगर काट मण्डू है जिसमें बहुत से लकड़ी के मन्दिर हैं ॥

बूटान

सिक्कम के पूरब एक पर्व्वती देश बूटान है उसका राजधानी नगर टासीसुदन है ॥

अन्यदेश वालों के राज्य फ्रेंच की अमलदारी

पांडेचरी और कारीकल कर्नाटक के किनारे पर और माही मलाबार के किनारे पर और चन्द्रनागौर हुगली नदी पर है ॥

पुर्तगीजों की अमलदारी

एक छोटासा जिला गोआ और पश्चिमी किनारे पर दामन और ड्यू टापू काठियावार प्रायद्वीप के किनारे पर हैं

[६५] सीलौन टापू अर्थात् लंका का वर्णन ॥

हिंदुस्तान के दक्षिण हिन्द के महासागर में बड़ा टापू सीलौन अर्थात् लंका है ॥

धरातल

उस टापू का किनारा और उस का आधा उत्तरी भाग नीचे को झुका हुआ है मध्य में ऊंचा मैदान और ऊंचे पहाड़ हैं ॥

नदी

इस टापू में बड़ी नदी महावली गङ्गा है और उस से छोटी २ बहुतसी नदियाँ हैं ॥

आब हवा

वहां ऊष्मा ऐसी नहीं है जैसी कि हिंदुस्तान के और पास के किनारे होती है ॥

वनस्पति

चांवल--नारियल-- कहवा-- दालचीनी ये मुख्य वनस्पति पैदावार वस्तु हैं ॥

निवासी

आबादी अनुमान उन्नीस लाख के है सिंघाली लोग इस टापू के मध्य और दक्षिण भागों में रहते हैं और तामील जाति वायवीय ज़िलों में निवास करते हैं और मूर अर्थात् मुसल्मान सम्पूर्ण टापू में फैले हुए हैं ॥

मत

सिंघालियों में बौद्ध मत और तामीलों में हिंदुओं का मत जारी है और इस टापू के भिन्न २ भागों में ईसाई मत की भी कुछ २ वृद्धि हुई है ॥

[६६] भागों का वर्णन ॥

सीलोन द्वीप ६ सूबों में विभाग हुआ है ॥

पश्चिमी सूबा

कोलम्बो बड़ा शहर टापू का राजधानी उस सूबे में है जहां से कहवा और नारियल का तेल- दार चीनी जहाजों पर लाई जाती है ॥

दक्षिणी सूबा ॥

इस में मुख्य नगर गाल है जिस के समीप चीन और हिंदुस्तान के धुएं के जहाज़ मिलते हैं ॥

पूर्वी सूबा

इसमें बड़ा शहर ट्रङ्कोमाली संसार के श्रेष्टतर बन्दरों में से एक है ॥

उत्तरी सूबा

इस में मुख्य नगर जाफना है ॥

वायव्यकोण

इस में बड़ा शहर कर्नीगाल है ॥

मध्य का सूबा

इस में मुख्य नगर कन्दी जो सिंघालो के बादशाहों की पिछली राजधानी था ॥

लाका द्वीप

मलाबार के किनारे से अनुमान डेढ़ सै मील के समीप पश्चिम की ओर छोटे२ और कम ऊंचे लाकाद्वीप के टापू हैं

माल द्वीप के टापू

लाकाद्वीप के दक्षिण में माल द्वीप (अर्थात् हज़ार टापू) हैं इन में बहुत से वृत्ताकार समूह नीचे टापुओं के हैं जो मूगों के पहाड़ों से घिरे हुए हैं ॥

इण्डमान और नीकोबार टापू

यह दो टापुओं के समूह बंगाले के खाल में हैं वहां बन्य लोग रहते हैं ॥

[९७] हिन्दी चीन के प्रायद्वीप का वर्णन ॥

एशिया का दक्षिणी पूरबी प्रायद्वीप पहले दूर का हिन्द या गंगा नदी के परे का हिंदुस्तान कहलाता था अब थोड़े दिनों से उसका नाम चीन हिन्दो या हिन्दी चीन होगया है उसके उत्तर में हिंदुस्तान - इटानियां और चीन का राज्य और पूर्व्वी चीन का महासागर और दक्षिण में स्याम का खाल और पश्चिम में बङ्गाले का खाल है ॥

धरातल

मध्य का वृत्तान्त कम जाना गया है परंतु ऐसा अनुमान किया जाता है कि वहां पहाड़ों की श्रेणी उत्तर दक्षिण चली गई है जिनके मध्य में ऐसा मैदान है कि हर एक

उन में से समुद्र की ओर यथा क्रम अधिक चौड़ा होता जाता है और इसी कारण से बड़ी नदियों के लिये मार्ग बनाता है ये नदी ऐरावती और सालवेन और मीनाम और कम्बोडिया हैं ॥

आब हवा

आब हवा बहुधा उष्ण और शीतलता युक्त है ॥

वनस्पति

मैदानों में चांवल के खेत बहुत पैदावार हैं और पहाड़ बेहद्द जंगलों से घिरे हुए हैं ॥

विभाग

मुख्य भाग ये हैं अर्थात् पश्चिमी किनारे पर सरकारी दखल कियेहुए देश और मध्य में ब्रह्मा और लाउस और दक्षिण में मलाया के राज्य और पूरब में स्याम और अनाम ॥

निवासी

यहांके बासी मङ्गोलिया और मलाकाकी सन्तानमें से हैं

[६८] इटेनी ब्रह्मा

इटेनी ब्रह्मा अराकान - पीगू और टिनासरम के सूबों से बना है ॥

बंगाले के खाल के पूर्वी किनारे पर तंग और लंबा अराकान देश है वह उत्तर में चट गांव से और दक्षिण में निग्रोस अन्तरीप तक चलागया है और उसको पहाड़ों की एक श्रेणी ने ब्रह्मा देश से पृथक् किया है ॥

निवासी

यहां के बासियों को साहिबान अंगरेज़ बहादुर सब

कहते हैं वे ब्रह्मा वालों के समान हैं और बौद्ध मत रखते हैं ॥

नगर

प्राचीन राजधानी अराकान समुद्र से कुछ अन्तर पर अब जीर्णता को प्राप्त है और बड़ा बन्दर अकियाब दक्षिण में है और अराकान की वर्त्तमान राजधानी केक फ्यू रामरी टापू पर है पीगू जो पहले ब्रह्मा का दक्षिणी सूबा था उस में वे ज़िले संयुक्त हैं जिनमें ऐरावती का दक्षिणी भाग वर्त्तमान है ॥

निवासी

यहां के बासी पेगोई और ब्रह्मी और कारन हैं पहले पीगू का राज्य स्वतंत्र था और ब्रह्मा पर अधिकारी था परंतु व्यतीत सदी में ब्रह्मा वालों ने आलमपुरा के साथ हो कर उसको विजय किया और सन् १८५२ ईसवी में पीगू सरकारी अमल्दारी में संयुक्त हुआ ॥

[६८] टनासरम के सूबे।

ये सूबे पेगू के दक्षिण से बंगाले के खाल के पूर्वी किनारे पर दूर तक चले गये हैं कारन लोग पर्व्वतों में बास करते हैं और उत्तम जन हैं उनके मध्य में ईसाई मत की भी बड़ी वृद्धि हुई है ॥

इस देशमें चार सूबे अर्थात् अमहर्स्ट ई टेवाय और मर गोई हैं ॥

नगर

सालवीन नदी पर बड़ा नगर मोलमीन वृद्धिमावी बन्दर है पोलो-पीनांग अर्थात्] सुपारी का टापू] एक छोटा और उर्व्वरा टापू मलाया के पश्चिमी किनारे पर है ॥

विलेज़ली का सूबा पीनांग के सन्मुख संयुक्त प्रायद्वीपपर एक ज़िला है और अधिक दक्षिण ओर एक और ज़िला मलाका है उसमें उसी नाम का नगर है ॥

मलाका की दक्षिण सीमा पर एक छोटे टापू में सिंघापुर है उसमें व्यापार बहुत होता है ॥

[७०] ब्रह्मा ॥

ब्रह्मा के पश्चिम सरकारी अमल्दारी और पूरब में चीन और स्याम हैं ॥

निवासी

ब्रह्मावाले मंगोलिया और मलायाकी मध्यवर्त्ती सन्तानों में अनुमान किये गये हैं वेलोग बड़े २ घंटों के ढालने और मुलम्मा करने में बड़े प्रवीण हैं वहां लाल और नीलम पाये जाते हैं और नफ़ता अर्थात् मिट्टी का तेल बहुत निकलता है ॥

राज्य

इस देश का राज्य अद्वितीय अर्थात् राजा को सब बातों का अधिकार रहता है ॥

मत

इस देश का मत बौद्ध है ॥

नगर

ऐरावती नदी पर आवा राजधानी है यह नगर सर्पते के झोंपड़ों से व्याप्त है जो खेत और मुलम्मेदार मन्दिरों को घेरे हुए हैं आवा के समीप अमरापुर है जो एक समय में राजधानी था ॥

[७१] स्याम ॥

पीगू और टिनासरम के सूबे के पूर्व्व की ओर स्याम के खाल के उत्तर स्याम देश है ॥

निवासी

स्याम के लोग ब्रह्मा वालों के समान हैं परंतु चालाकी और बुद्धिमानी में उनसे न्यून हैं ॥

राज्य

यह राज्य स्वतंत्र है राजा का भाई दूसरा राजा कहला ता है और उसको बड़ा अधिकार रहता है ॥

नगर

मीनाम नदी के दहाने से बीस मील पर बेंकोक राजधानी है आधी बस्ती के लगभग उन उत्तीर्यमान स्थानों में रहते हैं जो बांसों के बेड़ों पर बनाये जाते हैं और ऐसे बड़े २ लट्ठों से बंधे हुए होते हैं जो नदियों में खड़े किये जाते हैं वहां व्यापार मुख्यकर चीनियों के स्वाधीन है इसी नदीपर अधिक उत्तर की ओर यूथिया है जो प्राचीन राजधानी था

मलाया

मलाया प्रायद्वीप बहुतसे छोटे २ राज्योंमें विभाग कियागया है उनमेंसे उत्तरीय राज्य स्याम के बादशाह के स्वाधीन हैं और दक्षिणीय राज्य देशी राजाओं के आधीन है क्वइड़ा जिसके राजा से सरकार ईष्टइण्डिया कम्पनी ने वेलेजलीका सूबा लिया था वह उत्तरीय राज्यों में मुख्य है और जोहर मुख्य राज्य दक्षिण में है ॥

[७२] आनाम ॥

हिन्दी चीन प्रायद्वीप के पूर्वी किनारे को आनाम घेरे हुए है उसमें उत्तर की ओर टांकीन और मध्यमें* कोचीन चीना और दक्षिण में कम्बोडिया का एक भाग है ॥

---

* कोचीन चीना के एक भागमें थोड़े दिनों से फ्रांस वालों ने अधिकार करलिया है

नगर

कोचीन चीना में हुई राजधानी है जोकि यूरप वालों के सहश किले बन्द किया गया है दक्षिण ओर डुनाई नदीपर सोगान है जो पहले कम्बोडिया का राजधानी था और वायव्यकोण में सानकूई नदी पर टांकीन में कचो है ॥

लाउस अर्थात् शान्देश

इस प्रायद्वीप के मध्य के समीप शान्देश है उस के उत्तर में चीन और पूरब में आनाम और दक्षिण में स्याम और पश्चिम में ब्रह्मा है उस में बहुतसी बेजातें रहती हैं जो कुछ २ आसपास के देशों के स्वाधीन और कोई २ स्वतंत्र हैं यह देश बहुधा लोअस कहलाता है जो उसकी मुख्य जातों में से एक का नाम है ॥

[७२] चीन का राज्य ॥

चीन के राज्य के उत्तर में एशियायीरूस पूरब में स्थिर महासागर और दक्षिण में चीन हिन्दी का प्रायद्वीप और हिंदुस्तान और पश्चिम में स्वतंत्र तातार का देश है ॥

बड़े २ भाग मुख्य चीन-- कोरिया-- मंचूरिया--मंगोलिया चीनी-- तुर्किस्तान और तिब्बत हैं ॥

फारमोसा और हेनान टापू चीन के किनारे पर हैं ॥

मुख्य चीन

धरातल

यद्यपि कई पहाड़ों की श्रेणी चीन में हैं परंतु वहां चौड़े मैदान भी हैं जो बड़ी २ नदियों के कारण उर्व्वरा और नहरों से कटे हुए हैं ॥

आब हवा

वहां की आब हवा उष्ण ऋतु में गरम और शरद ऋतु में शीतल होती है ॥

खान की वस्तु

पश्चिम के पहाड़ों में तांबा जस्त और पारा पाया जाता है उत्तर में पत्थर का कोयला बहुत होता है परंतु खानकी पैदावारियों में से कावलीन बड़े मोल का है—[कावलीन अच्छे प्रकार की चिकनी मट्टी है जिस्से चीनी के बर्त्तन बनाये जाते हैं ॥

वनस्पति

खेती की मुख्य वस्तु इस देश में चांवल और चाह है ॥

[७४] निवासी ॥

चीन के लोग मंगोलियाओं की सन्तान में से हैं वे लोग हुनरमन्द और परिश्रमी हैं और माता पिता की प्रतिष्ठा करते हैं परंतु छली और प्राचीन रीतों के बहुत अनुयायी हैं और अन्य देशवालों को तुच्छ समझते हैं ॥

हस्तगत कर्म

रेशम चीनी के बर्त्तन लुकदार वस्तु हैं ॥

व्यापार

अफीम - रुई और रुई की वस्तु, ये मुख्य करके अन्य देशों से आती हैं और वे वस्तु जो अन्य देशों को जाती हैं चाह - रेशम - चीनी के बर्त्तन और शक्कर हैं ॥

राज्य

बादशाह को बहुत अधिकार है और मुख्य अधिकारी मेंदरीन कहलाते हैं ॥

मत

बौद्ध मत प्रचलित है और बड़े अधिकार वाले लोगों में बहुधा कनफ्यूशीस के मतानुयायी हैं और पितरों को सब पूजते हैं ॥

[७५] नगर ॥

चीन के बड़े नगरों के आस पास नीली ईंट की ऊंची दीवारें घिरी हैं और स्थान २ पर बुर्जों से रक्षित हैं मकानात बहुधा ऐसे खपरों से छाये हुए हैं जो रोगनदार और चमकदार रंगों से रंगे हैं ॥

पीकन अर्थात् [उत्तरीय दरबार] ईशान कोण में राजधानी है वह दो खंडों से मिला है अर्थात् चीनी और तातारी नगर पिछले में रनवास और बादशाही बागात हैं उस की आबादी अनुमान से बीस लाख है ॥

नान किन अर्थात् [दक्षिणी दरबार] यांसीक्यां नदी पर है जो प्राचीन समय में राजधानी था ॥

दक्षिण में बड़ा नगर कांटान है बहुत समय तक केवल इसी स्थान पर अन्य देशियों के आने की आज्ञा थी चाह के व्यापार का यह मुख्य बन्दर है ॥

सन् १८४१ ईसवी में जब साहिबान अंगरेज बहादुर से युद्ध समाप्त हुआ तब चार और बन्दर व्यापार के निमित्त अर्थात् अमाय, फूचू, निंगपो और शेङ्ग हाय नियत हुए निंगपो चूजान टापू के सन्मुख है उसमें रेशम का व्यापार अधिक होता है ॥

शेङ्गहाय चीन के मुख्य बन्दरों में से एक है और यांसी क्यां नदी के दहाने के समीप है पिछले बचन पच से यूरप बासियों को चीन देश के प्रत्येक भाग में अब जाने की आज्ञा होगई है ॥

अन्य देशियों के राज्य

मकाऊ का टापू साहिबान पोर्तुगीज़ के अधिकार में और हांकां साहिबान अंगरेज़ बहादुर के स्वाधीन है ॥

[७६] कोरिया ॥

ईशानकोण में प्रायद्वीप कोरिया है यह चीन का महसूल देने वाला राज्य है मध्य के समीप किंकटाओ राजधानी है ॥

मंचूरिया

मुख्य चीन के उत्तर मंचूरिया है इसकी पृथ्वी पर्बती और असूर नदी से उर्बरा है सन् १६४४ ईसवी में मंचू लोगों ने चीन को विजय किया उसकी राजधानी मोनैाला है ॥

मंगोलिया

मंचूरिया के पश्चिम मंगोलिया है इस में बड़ा बियाबान गाबी है यहां के निवासी तातारी जाति के बन्य हैं जो इन बड़े मैदानों में स्थान २ पर अस्थिर रहते हैं और अपनी गाय भैंस और भेड़ बकरियां और अनाज से निर्बाह करते हैं बेकाल झील के दक्षिण अर्गा मुख्य नगर है ॥

चीनी तुर्किस्तान

मंगोलिया के पश्चिम चीनी तुर्किस्तान अर्थात् [छोटी बुकेरिया है] यहां के निवासी ऐसे बन्य नहीं हैं जैसे मंगोलिया के हैं इनका मत मुहम्मदी है और यारकन्द राजधानी है और जो कारवानी व्यापार कि चीन और पश्चिमी एशिया में परस्पर होता है उसका मुख्य स्थान है ॥

[७७] तिब्बत ॥

यह देश हिंदुस्तान के उत्तर एशिया के धरातल का उन्नत भाग है वह चारों ओर पहाड़ों की ऊंची श्रेणियों से घेरा हुआ है इस में कई झीलें और सिन्धु नदी और गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी के निकलने का स्थान है ॥

आब हवा आदि

जाडों में बहुत शीत होता है ॥

भेड़, बकरी, गाय, बैल और याक अर्थात् [एक प्रकार का भैंसा] मुख्य पालतू पशु हैं यहां की भेड़ों की पूंछ चौड़ी होती है और वे बोझा लादने वाले पशुओं के सदृश लादी जाती हैं बकरियों के बाल बहुत उत्तम होते हैं जो बाहर को भेजे जाते हैं ॥

निवासी

निवासी लोग दृढ़ और परिश्रमी हैं और अनुमान सौ वर्ष व्यतीत हुए कि तिब्बत चीन की अमल्दारी में संयुक्त हुआ है ॥

मत

तिब्बत बौद्ध मत वालों की पूजा का मुख्य स्थान है वहां ऐसा अनुमान किया जाताहै कि महालामा के शरीर में बौद्ध रहताहै लासा राजधानी और मसकिन महालामा के रहने का स्थान है ॥

[७८] जापान ॥

जापान का राज्य नैफन, क्यूस्यू, सीकोक और अन्य कई छोटे २ उन टापुओं से संयुक्त है जो चीन के पूरब स्थिर महा सागर में हैं ॥

निवासी

यहां के लोग मङ्गोलियों के घराने में से हैं और चाल चलन और रीतों में चीनियों के सदृश हैं ॥

हस्तगत कर्म्म ॥

रेशम, रुई और चीनी के बर्त्तन और लुकदार वस्तु हैं

मत

इन लोगों में बौद्ध मत जारी है ॥

नगर

नैफन के पूरब एक बड़ा जद्दू नगर राजधानी है जद्दू के दक्षिण मत के आचार्य्य की मियांको राजधानी है ॥

क्युस्यू टापूमें नंगासाकी है बहुत दिनों तक केवल इसी बन्दर में अन्य देश वालों को व्यापार के लिये आज्ञा थी ॥

[७८] एशियायी रूस का वर्णन ॥

सैबेरिया का विस्तृत देश जो एशियाके सम्पूर्ण उत्तरीय भाग में फैला हुआ है और काकेशियन सूबें से जो काफ पर्बत की श्रेणी और फारस के मध्य में है इन दोनों से एशियायी रूस बना हुआ हैं संपूर्ण यूरप से यह देश एक तिहाई अधिक है ॥

आब हवा

हिमसमुद्र की ओर से तीक्ष्ण और शीतल वायु सब देशों में चलती है और छः महीने से अधिक तक पृथ्वी बरफसे ढकी रहती है ॥

खान

पुरानी दुनियां में सैबेरिया देश धातों की पैदावारी से अत्यन्त पैदावारों में एक है क्योंकि वहां सोना, चांदी और प्लाटीना बहुत निकलते हैं ॥

पशु

इस देश में जङ्गली पशु बहुधा होते हैं और रुद्ध और श्वेट समूरों के वास्ते शिकार किये जाते हैं ॥

निवासी

देशी ज़ातों में बहुधा बन्य और अस्थिर ज़ातें हैं उन में एक चौथाई के लगभग यूरप के बासी हैं बहुधा उन में वे अपराधी और देश निकाले हुए हैं जिन को खान से मिट्टी निकालने का परिश्रम रूपदण्ड हुआ है ॥

व्यापार

मुख्य व्यापार की वस्तु जो अन्य देशों को जाती हैं वह

समूर और धातु हैं चाह-- रेशम और अन्य वस्तु चीन से इस देश को आती हैं ॥

[८०] विभागों का वर्णन ॥

सैबेरिया रूसके बादशाह के स्वाधीनहै और नौ गवर्न्मेंटियों में विभागित है उनमें से मुख्य पश्चिम में टोबाल्कस और मध्य में इर्कट्स्क और पूरब में याकट्स्क हैं ॥

एक बड़ा प्रायद्वीप कामस्कटिका सैबेरिया के पूरब में है॥

कुरील के टापू कामस्कटिका की दक्षिणी नौक से जापान के टापुओं तक फैले हुए हैं बड़ा टापू सघालियन अमूर नदी के दक्षिण है ॥

काकेशियन अर्थात् काफ के सूबे ॥

काकेशियन सूबों के उत्तर काफ पर्वतकी श्रेणी है और पूरब में कास्पियन्सागर और दक्षिण में ईरान और रूम और पश्चिम मे काला सागर है इसका मुख्य भाग जार्जिया है यह देश पर्ब्बतो सजल और उर्व्वरा है यहां की आबहवा उष्ण ऋतुमें उष्ण और शरद ऋतुमें अत्यन्त शीतल होती है जार्जिया की स्त्रियाँ स्वरूपता के कारण प्रसिद्ध हैं ॥

पर्ब्बती जातों में से बहुधा मुसल्मान हैं और जार्जिया के रहनेवाले यूनानी गिर्जे के ईसाई हैं ॥

नगर

कर नदी पर टिफलिस राजधानी है और रूसी आर्मिनिया में बड़ा नगर एरीवान उसी नामकी झील के निकटहै

[८१] स्वतंत्र, तातार या तुर्किस्तान का वर्णन ॥

तातार के उत्तर में सैबेरिया और पूरबमें चीनका राज्य और दक्षिण में अफ़ग़ानिस्तान और ईरान और पश्चिम में कास्पियन समुद्र और यूराल नदी है ॥

धरातल

दक्षिणी और पूरबी तातार पर्व्वती हैं परंतु मुख्य करके उसकी धरती नीची और समधरातल है और वहां चलाय मान रेतके बड़े २ बेहड़ हैं जिन को ड्रूहपीज़ कहते हैं इस देश का पानी सैंहूं और अमू नदी के द्वारा निकलता है यह दोनों नदियां अर्ल सागर में गिरती हैं जो एक बड़ी उथली और नाशवान झील है ॥

निवासी

यहां के वासी प्राचीन समय के सिथिया वालों के सदृश लड़ाई में साहसी हैं परंतु भयानक और निर्दय औरछली और दासों के मोललेने और बेचने में निठुर हैं उनकामत सुन्नत जमात है और ईरानी लोग जो शिया हैं उन से अत्यन्त घृणा करते हैं ॥

नगर

इस देश में बुखारा सबसे बड़ा और बड़े ब्यापार का स्थान है ॥

पूरबमें समरकन्द है जब यह नगर तैमूर अर्थात् तातारी तिमरलङ्ग का सन् १३७० ईसवी से १४०५ ईसवी तक राज धानी था तब एशिया के बड़े नगरोंमेंसे एक अनुमान किया जाता था परंतु अब बहुत घट गया है ॥

अग्नि कोण में प्राचीन नगर बलख है परंतु अब बहुत उजाड़ है यह जरतुश्त पारसी मत चलाने वाले का उत्पत्ति स्थान होने के कारण प्रसिद्ध है उत्तर में सर नदी पर को-कान है ॥

पश्चिम में अमू नदी के समीप खैवा है जहां दासों के क्रय विक्रय करने की बड़ी मंडी है ॥

[८२] अफ़गानिस्तान॥

अफ़गानिस्तान की उत्तर सीमा स्वतंत्र तातार औरपूर्वी सीमा हिंदुस्तान और दक्षिण सीमा बलोचिस्तान और पश्चिम सीमा ईरान है॥

आब हवा

उष्ण ऋतु में उष्णता अधिक होती है और शरद ऋतु में शरदी बहुत होती है॥

पैदावारी

यद्यपि इस देशकी पृथ्वी में बहुतसे शुष्क बियावान और पहाड़ हैं तिसपर भी बाजे खण्ड बहुत उर्व्वरा हैं जिन में अनाज रुई और उत्तम २ मेवा पैदा होती हैं॥

निवासी

यह देश नाना प्रकार की बन्य और भयानक जातों से बसा है जिनकी भयानक सूरत और लम्बी २ डाढ़ी और बालदार चमड़ों के बुरके होते हैं॥

नगर

काबुल नदी पर ईशानकोणमें काबुल नगर दुर्रानियों की राजधानीहै यह नगर बाबर शाहन्शाह का चित्त विनोदक स्थान था॥

खैबर घाटे के सिरे पर पूरब को ओर काबुल नदी पर जलालाबाद है यह इस कारण प्रसिद्ध है कि अफ़गानिस्तान की लड़ाई में सर राबर्ट सेल साहिब बहादुर ने अपनी स्वाधीनता में रक्षित रक्खा॥

काबुल के नैऋत्यकोण में हिंदुस्तान पर चढ़नेवाले महमूद की राजधानी ग़ज़नी है नैऋत्यकोण में हिलमण्ड नदीकी एक सहायक पर कन्धार और उत्तरीय पश्चिमीय सीमा के समीप

हिरात है जिस पर ईरान के लोग बारंबार चढ़ाई कर चुके हैं ॥

[८३] बलोचिस्तान

अफ़गानिस्तान और अरब के समुद्र के मध्य में बलोचिस्तान है यह देश पहाड़ी, पहाड़ों और बियावानों की स्रेणियों से मिला है ॥

निवासी

चरवाहे जाति के बहुधा वहां के वासी हैं और लूट मार के करने वाले हैं ॥

बड़ा नगर क़िलात समुद्र से आठ हज़ार फुट ऊंचा है ॥

[८४] ईरान ॥

ईरान की उत्तर सीमा कास्पियन समुद्र और तातार पूर्वी सीमा अफ़गानिस्तान और बलोचिस्तान और दक्षिण सीमा फ़ारस का खाल और पश्चिमी सीमा एशियायी रूम है ॥

धरातल

इस देश का मध्य एक ऊंचे समधरातल से संयुक्त है जो पर्व्वतों से घिरा हुआ है उसके मध्य और पूरब के भागों में बहुधा निमक और रेत के बियावान हैं उत्तर पश्चिम की ओर कुछ भाग बहुत उर्ब्बरा हैं और निमक की झीलें बहुत हैं ॥

निवासी

ईरान के वासी प्रसन्न चित्त और अत्यन्त मिलनसार होते हैं परंतु बड़े छली इस देश में बन्य और चलायमान स्थानी जातों के लोग बहुत हैं ॥

हस्तकृत सामर्थ्यता

ईरान के लोग शाल, फर्श, क़ालीन, और तलवार के फल

बनाने में अत्यन्त प्रवीण हैं वहांसे दूसरे देश को जानेवाली मुख्य वस्तु रेशम है ॥

मत

ईरान के लोग शिया मुसल्मान हैं ॥

अमलदारी

बादशाह अत्यन्त अधिकार रखता है और अपनी प्रजा में से चाहे जिसे अपराध निश्चय किये बिना भी मरवा सक्ता है ॥

नगर

उत्तर में तिहरान राजधानी है मध्य के समीप अस्फहान है जो खलीफों के समय में राजधानी था ॥

फारस के खालके पूरब शीराज है उसमें दो बड़े ईरानी कवि अर्थात् हाफिज़ और शादी की कबरें हैं ॥

शीराज के उत्तर पर्सीपालस है यह प्राचीन समय में ईरानियों की राजधानी था फारस के खाल पर बड़ा बन्दर बूशहर है ॥

मध्य में यज़्द नगर है और कारवानी व्यापारों के मुख्य स्थानों में से एक है वायव्य कोण में तबरेज़ ईरान के बड़े प्रसिद्ध नगरों में से एक था ॥

[८५] अरब ॥

एशिया का नैऋतकोण बड़े प्रायद्वीप अरबसे बना है उसके उत्तर एशियाधोरूम और पूरब फारस का खाल और अरब का समुद्र और पश्चिम लालसागर अरब रेगस्तानी बियाबान है परंतु उसमें कई ओसिस अर्थात् उर्बरा भागभी हैं अनुमान किया जाता है कि उसका मध्य समधरातल है जिसमें होकर पर्व्वतों की श्रेणी गई हैं परंतु उसके स्थान२पर जो

भिन्न२ ओसिस हैं उनके सिवाय घास आदि कुछ नहीं होती उर्व्वरा होनेके कारण इस देशका दक्षिणी और पश्चिमी कि नारा अरब फोलिक्स अर्थात् सुख युक्त अरब कहलाता है ॥

वनस्पति

धौरी एक प्रकारका रूखा और मोटा अनाज और कुहा रा खाने की मुख्य वस्तु हैं दक्षिण में कहवा और मसाले उत्पन्न होते हैं ॥

पशु ॥

अरब देश घोडे की श्रेष्ट उत्पत्ति के कारण प्रसिद्ध है और ऊंट बालू में बोझा लादने के लिये अत्यन्त उपकारी है ॥

निवासी

अरब स्वतंत्र समूहों में विभाग किया हुआ है और अपने२ मुख्य जुदे २ शेखों अर्थात् सरदारों के स्वाधीन है किनारे के रहने वाले कुछ २ योग्य हैं परंतु मध्य के समूह जो वदोइन कहलाते हैं वे वन्य और भयानक हैं और भेड़ बकरी और लूट से अपना निर्वाह करते हैं ॥

[८६] मत

अरब के लोग मुसल्मान हैं ॥

नगर

लालसागर से चालीस मील के लगभग दूर मक्का मुहम्मद की जन्म भूमि है वहां हाजी बहुत जाते हैं ॥

जिद्दा मक्के का बन्दर किनारे पर है ॥

मक्के के उत्तर मदीना है जहां मुहम्मद की क़बर है ॥

मदीने का बन्दर यम्बो है ॥

दक्षिणमें यमन की राजधानी सनआ समुद्रसे कुछ अन्तर पर है ॥

बाबुलमण्डप के मुहाने के समीप मोक्खः बन्दर है जहां से कहवा बाहर जाने को जहाजों पर लादा जाता है ॥

लालसागर पर अदन है जो साहिबान अंगरेज बहादुर के स्वाधीन है ॥

पूर्वी किनारे पर मस्कत बड़े व्यापार का स्थान है और इमाम मस्कत जो अरब में बड़ा सरदार है उस की राजधानी है ॥

[८७] एशियायी रूम का वर्णन ॥

एशिया का ठेट पश्चिमी देश एशियायी रूम है उस की उत्तर सीमा जार्जिया और काला सागर और पूर्वी सीमा ईरान और दक्षिणी सीमा अरब और पश्चिमी सीमा रूम का सागर है ॥

इस देशके मुख्य भाग एशियायी कोचक, शाम, पैलेस्टैन अर्थात् कनआन, आर्मिनियां, कर्दिस्तान अर्थात् असीरिया और अल्जजरा अर्थात् मेसोपोटैमियां हैं ॥

लघु एशिया

यह बड़ा अायद्वीप काला सागर और रूम के सागर के मध्य में है ॥

धरातल

इसका मध्य एक ऊंचे और समधरातल से संयुक्त है जिस के उत्तर में पहाड़ों की श्रेणी कालेसमुद्र के किनारे २ चली गई हैं उसके दक्षिण में तारस पहाड़ की श्रेणी है ॥

नदी

इसमें अत्यन्त लम्बी नदी कज़ल इर्म्मिक अर्थात् लाल नदी है आगे के लोग जिसको हयलिस कहते थे इस नदी से दूसरे दरजे पर सकारिया नदी है यह दोनों कालेसागर

में गिरती हैं और मियान्दर हरमस सरावत आर्किपेलेगो अर्थात् ईजियन समुद्र में गिरती हैं ॥

आब हवा

यहां की हवा सम और चित्तरोचक है ॥

पैदावारी

चांवल, मक्का, शक्कर, मेवा रुई ये मुख्य वनस्पति पैदावार वस्तु हैं परंतु अन्याय के कारण खेती में बड़ी सुस्ती होती है ॥

अंगूरा में एक प्रकार की बकरियां पाई जाती हैं जिनके बाल रेशम के सदृश कोमल होते हैं और शाल बनाने में काम आते हैं ॥

[८८] निवासी

यहां के निवासी निज करके तुर्क हैं परंतु यूनानी और अर्म्मनी और यहूदी बहुत हैं और बढ़ते जाते हैं ॥

तुर्कों का मत मुहम्मदी है और ईसाइयों में बहुधा यूनानी गिर्जे के हैं ॥

मुख्य भाग

पश्चिम में अनान्टोलिया [अनान्टोलिया का अर्थ वही है जो लीवेंट का अर्थ है] अर्थात् [जिससे उदयहोना वा पूर्व प्रयोजन है] यूनान के रहने वालों ने इस देशका यह नाम रक्खा था और मध्य में करामानियां ईशान कोण में रूम अर्थात् सिवास है ॥

नगर

पश्चिममें स्मरना इस देशका बड़ा शहर और बड़े व्यापार का स्थान है ॥

बास्फोरश मुहानेपर स्कुटारी कुस्तुन्तुनियां की पूर्वी सीमा है ॥

ये अनेटोलिया का मुख्य नगर कताया सिकार्यों नदी के एक सोते परहै मध्य की ओर अंगूरा बकरों के कारण प्रसिद्ध है जिनके बाल रेशम के तुल्य होते हैं ॥

काले सागर के किनारे सीनोप और ट्रेवीजांट बंदर हैं कोनी जो प्राचीन समय में आई कोनियम कहलाता था वह अंगूरा के दक्षिण है ॥

नैऋत्यकोण में सिडनस नदी पर तारसस है ॥

किज़िल इर्म्मिक नदी के निकास स्थानके समीप सिवास रूम की राजधानी है ॥

सिवास के वायव्य कोण में तौकत है ॥

टापू ॥

सैप्रस अर्थात् सनोबर एक बड़ा उर्व्वरा भूमि वाला टापू दक्षिण की ओर रूम के सागर में है एशिया कोचक के नैऋत्य कोण के समीप रोडस है ॥

[८६] सीरिया अर्थात् शाम और पैलस्टैन अर्थात् कनआन का वर्णन ॥

यह दोनों भाग रूम सागर और फ्रात नदी के मध्य में हैं उनकी उत्तर सीमा तारस की श्रेणी और दक्षिण सीमा अरब है ॥

प्राचीन समय में ये खण्ड थे उत्तर में शामउत्तरी और मध्य में मध्यशाम और दक्षिण में शाम किनाआनी ॥

निवासी

यहां बहुधा तुर्क रहते हैं परंतु अरब के लोग बहुत हैं लेबेनान पहाड़ में दो जातें मैरूनाइत और ड्रूसी बसते हैं ये लोग भी स्वतंत्र सेहोहैं कनआन में कुछ यहूदी हैं ॥

शाम और कनआन चार पाशालिक में बिभाग कियेगये हैं उत्तर में हलब और किनारे पर ट्रिपोलाई और एकर और लबनान के पूरब डमस्कस अर्थात् दमिश्क ॥

नगर

उत्तर में हलप शाम की वर्त्तमान राजधानी है॥

रूम सागर के ईशान कोण के समीप स्कान्दरून अर्थात् अलक जेंड्रेटा बन्दर है॥

शाम के किनारे पर ट्रिपोलाई और बेरूट बन्दर हैं॥

पलमीरा जिसको प्राचीन समयमें तादमोर कहतेथे और बालबेक लेबेनान के पूरब दो नगर हैं परंतु अब उजाड़ हैं

कनआन के ईशान कोण में एक उर्वरा भूमि के मैदान में दमिश्क है यरोशलीम और नेब्लस जिसको प्राचीन समयमें शेचम कहतेथे और नज़रत और गाज़ा मुख्य नगर कनान के हैं एकर और जाफ़ा जिसमें से पिछले को प्राचीन समय में जापा कहते थे मुख्य बन्दर हैं॥

सूर जो प्राचीन काल में टायर कहलाता था वह एक छोटा गाँव है जिसमें मछुए बसते हैं॥

[८०] आर्मिनियां॥

काले सागर के आग्नेय कोण में आर्मिनियां है उस के पूर्वी ज़िले रूस और ईरान के स्वाधीन हैं इस देश में ऊंचे धरातल और ऊंचे पहाड़ हैं जिनमें स्थान २ पर रमणीय घाटियां हैं॥

आराराल पर्वत की चोटी जो पूरबी सीमा पर है वह सदैव बरफ़ से ढकी रहती है॥

फ़ात नदी दक्षिण की ओर बहतीहै और कर नदी अपनी सहायक आरास नदी के साथ पूरब ओर बहकर कास्पियन सागर में बहती है॥

नगर

मध्यके समीप राजधानी अर्ज़रूम है और उत्तर ओर कार्स है॥

करदिस्तान अर्थात् असीरिया का वर्णन

करदिस्तान जो प्राचीन कालमें असीरिया कहलाता था वह आर्मिनियां के दक्षिण में है ॥

करदिस्तानी लोग एक भयानक चरवाहा जाति में से हैं और लूट के बड़े अभ्यासी हैं उनका मत मुहम्मदी है परंतु पारसी मत और भूत पूजा से मिला हुआ है ॥

अलजसरा अर्थात् मैसोपोटोमियां का वर्णन

अलजसरा जो प्राचीन समय में मैसोपोटोमियां प्रसिद्ध था फ्रात नदी और दजला के मध्य और करदिस्तान के दक्षिण में वर्त्तमान है ॥

नगर

दजला नदीपर मूसल राजधानी है जो एक समयमें श्रेष्ट मलमल के कारण प्रसिद्ध था ॥

उत्तर में दजला नदी के निकट डायर बीकर है ॥

आरफा वायव्य कोणमें वर्त्तमान है अनुमान करते हैं कि इस को इराक अरब के लोग प्राचीन समय में अर कहते थे ॥

इराक अरब अर्थात् कोलडिया का वर्णन

इराक अरब जो प्राचीन समय में बाबुल कहलाता था वह दजला और फ्रात नदी के दक्षिणी भाग के पास है यह दोनों नदियां फारस के खालमें गिरनेसे पहले एक दूसरे से मिलजाती हैं ॥

नगर

बगदाद जोकि एक समय खलीफों का बड़ा चमत्कारी राजधानी स्थान था दजला नदी पर है अबतक उसमें कारवानी व्यापार बड़ी आधिक्यता से होता है बगदादके दक्षिण फ्रात

नदीपर प्राचीन बाबुल के खंडेरों के मध्य हिल्लाहै फ्रातनदी और दजला नदी की संयुक्त धारपर बसरा है वहां व्यापार बहुत होता है ॥

देशों का नाम	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	अनुमान आबादी	नाम राजधानी	अनुमान आबादी
अफगानिस्तान,…………	२५००००	५५००००००	काबुल, ……	५0000
आनाम, …………………	१२००००	१००००००	ह्यूई, ……	६0000
अरब, …………………	१००००००	१००००००	मक्का, ……	२४000
बलोचिस्तान, ……………	१५००००	१५०००००	किलैट,……	२0000
ब्रह्मा, …………………	२०००००	३००००००	अवा, ……	३0000
चीन का राज्य,…………	५३५००००	३५००००००००	पेकिन,……	१२00000
हिंदुस्तान, ……………	१४६००००	१८००००००००	कलकत्ता, …	१000000
जापान, ………………	२६००००	२५००००००	जद्दो, ……	१000000
फारस, ………………	४५००००	८००००००	तिहरान, …	७0000
एशियायी रूम, …………	५५००००	४००००००	टोबालस्क,…	२0000
स्याम, ………………	२०००००	५००००००	बेंकोक,……	८0000
स्वतंत्र तातार, …………	८०००००	५००००००	बुखारा, …	१२0000
एशियायी तुर्किस्तान अर्थात् रूम,…………	४५००००	१२००००००	स्मरना, …	१३0000

दोहा ॥

नयन पक्षनव बिधु शुभग सम्वत् मांहि सुचारु ।
रच्यौ तत्त्व भूगोल यह परमश्वर सविचारु १ ॥
नारमयल स्कूल के काली चरण सुनाम ।
हिन्दी के पाठक सुमति रच्यौंग्रन्थ सुललाम २ ॥